महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री षटऋतु

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

श्री षटरुती

वर्षा रुत - राग मलार

मारा वालाजी रे वल्लभ, कहुं एक विनती ।
मारा करमतणी रे कथाय, सुणो मारी आप वीती ॥ १

इन्द्रावती कहती है, हे मेरे प्रियतम धनी ! मैं यह प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरे कर्मोंकी कथाएँ तथा मेरी आपबीती सुनिए.

वाला आव्यो ते मास अषाढ, के रुत मलारनी ।
जाणुं करी रे वालासुं विलास, लेसुं लाण आधारनी ॥ २

हे प्रियतम धनी ! आषाढ़ मास आया है (इसी महीनेमें परमधामसे ब्रह्मात्माओंकी सुरता इस खेलमें आई थी), यह वही मल्हारकी ऋतु है. मनमें ऐसा विचार आता है कि इस ऋतुमें अपने प्रियतम धनीके साथ प्रेम विलास कर धनीके अखण्ड सुखका आनन्द लूँ.

मारी जोगवाई हुती जेह, सुफल थासे आ वारनी ।
जाणुं आवी माया मांहें, भाजसुं हाम संसारनी ॥ ३

मैंने सोचा था कि इस बार यह मनुष्य तन सार्थक होगा. इस मायावी संसारमें आकर सांसारिक इच्छाएँ पूरी करूँगी.

वर्षा रुते करमे काढी वदेस, अवगुण हुता अपार रे ।
हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोण सार रे ॥ ४

मेरे कर्मोंने मुझे इस वर्षा ऋतुमें विदेशमें धकेल दिया है. मायावी खेल देखनेकी इच्छा रूपी मेरे अवगुण अपार थे. अब ऐसे समयमें प्रियतम धनीके बिना मुझे दूसरा कौन सम्हालेगा ?

वाला वरसे ते मेघ मलार, वीजलडीना साटका रे ।
मुने वालाजी विना आ रुत, लागे अंग झाटका रे ॥ ५

हे धनीजी ! वर्षा ऋतुमें काले बादल घोर वर्षा कर रहे हैं. बिजली कड़क रही है. प्रियतमके बिना यह ऋतु मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें कम्पन पैदा कर रही है अर्थात् मेरे अङ्ग-अङ्गमें विरहाग्नि प्रज्वलित हो रही है.

मोरलिया करे रे किंगोर, सुणीने गरजना रे ।
मारो जीव आकुल व्याकुल थाय, सुणी स्वर कोएलना रे ॥ ६

मेघ गर्जना सुनकर मयूर बोल रहे हैं. कोयलकी ध्वनि सुनकर मेरी आत्मा विरह वेदनाके कारण आकुल व्याकुल हो रही है.

मुने केम करी रैणी जाय, बपैया पीउ पीउ लवे ।
सुन्दरी कहे आ वार, तेडो चरणे हवे ॥ ७

पपीहा रात भर पिउ-पिउ रटता रहता है, मेरी यह रात कैसे बीतेगी ? इन्द्रावती ऐसे समय पर कहती है, हे धनीजी ! अब आप मुझे अपने चरणोंमें बुला लीजिए.

निस दिवस दोहेली थाय, पीउजी विना अंगना रे ।
मारुं कालजडुं रे कपाय, मारा वालाजी विना रे ॥ ८

प्रियतम धनीके बिना यह अङ्गना रात-दिन दुःखी हो रही है. अरी ! मेरा कलेजा प्रियतम धनीके बिना कटा जा रहा है.

अचके वा वाय, उछले वन वेलडी रे ।
हुं तो वालाजी विना रे वदेस, झुरुं छुं एकली रे ॥ ९

इस समय वायु रुक-रुक कर बह रहा है. वनकी लताएँ उछल-उछल कर

झूम रहीं हैं. ऐसे समयमें मैं अपने प्रियतमके बिना विदेशमें अकेली तड़फ रही हूँ.

मारी वहेली ते लेजो सार, वालाजीनी हुं विरहणी रे ।
मुने दिवस दोहेला जाय, वसेके रैणी रे ॥ १०

हे धनी ! आप मुझे शीघ्र ही सम्हाल लें. मैं आपकी वियोगिनी हूँ. मेरे दिन कठिनाईसे बीत रहे हैं. रात्रि तो इससे भी अधिक कठिन हो रही है.

इन्द्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणां रे ।
जे में कीधां रे अपार, वालाजीसुं अति घणां रे ॥ ११

इन्द्रावती प्रार्थना करती है, हे धनीजी ! मुझसे अपने जीवनमें इतने अधिक अवगुण हुए हैं, उन सबको आप भूल जाइए.

हवे वादल मलियां रे मलार, सोभा लिए वनराय रे ।
रुचियो ते वरसे मेह, तेडी भीडो अंगनाय रे ॥ १२

अब वर्षा ऋतुके कालिमा भरे बादल एकत्रित हो गए हैं. वनराजि हरियालीके कारण सुन्दर शोभा ले रही है. मनोनुकूल वर्षा हो रही है. ऐसे समयमें हे धनीजी ! आप इस अङ्गनाको बुलाकर गले लगा लें.

धराए कीधो सणगार, डुंगरडा नीलया रे ।
एणी रुते रे आधार, करो सीतल काया रे ॥ १३

धरतीने सुन्दर (हरित) शृङ्गार सजा रखा है. पर्वतों पर भी हरियाली छाई हुई है. इस मनमोहक ऋतुमें मेरी देहको शीतलता प्रदान करें.

मारी वहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे ।
पछे आवीने लेजो सार, काया पडी हसे रे ॥ १४

हे धनीजी ! अब शीघ्र ही आ कर मुझे सम्हाल लें, अन्यथा मेरे प्राण निकल जाएँगे. यदि आप बादमें मेरी सम्हाल लेने आएँगे तो मात्र मेरा निष्प्राण शरीर ही पड़ा मिलेगा.

मारा अवगुण घणां रे अनंत, पण छेह केम दीजिए रे ।
एणे वचने इन्द्रावती अंग, वालो तेडी लीजिए रे ॥ १५

मुझमें असंख्य अवगुण हैं, फिर भी आप मुझे क्यों वियोग दे रहे हैं ? (आप तो क्षमावान् हैं) प्रार्थनाके ये वचन सुन कर, हे प्रियतम धनी ! अपनी अङ्गना इन्द्रावतीको अपने पास बुला लीजिए.

प्रकरण १ चौपाई १५

सरद रुत - राग सामेरी

सरदनी रुत रे सोहामणी रलियामणी ,
मुने वालाजी विना केम जाय हो वालैया ।
हुं रे वदेसणना पीउजी ,
मुने खिण वरसा सो थाय ॥ हो वालैया ॥ १

शरद्कालकी यह सुन्दर ऋतु नयनाभिराम है, प्रियतमके बिना यह कैसे बीतेगी. हे मेरे प्रियतम धनी ! मैं इस संसाररूपी विदेशमें अकेली पड़ी हूँ. यहाँ पर एक क्षण भी मेरे लिए सौ वर्षोंके समान बीत रहा है.

वालाजी रे डोहलां ते जल रे वही गयां, हवे आव्यां ते निरमल नीर ।
पीउजी विना हुं एकली, ते तां केम राखुं मन धीर ॥ २

हे प्रियतम ! अब तो वर्षाका मटमैला पानी बह चुका है और उसके स्थान पर स्वच्छ निर्मल जल आने लगा है. प्रियतमके बिना अकेली मैं अपने मनमें कैसे धैर्य धारण करूँ ?

वालाजी रे वन छाह्युं द्रुम वेलडी, हवे धणी तणी आ वार ।
हुं रे वदेसणना पीउजी, मुने चरणे तेडो आधार ॥ ३

हे प्रियतम धनी ! वृक्षों और लताओंसे सारा वन प्रदेश आच्छादित हो गया है. ऐसे समय आपके आगमनकी ही देर है. मैं तो विदेशमें हूँ. हे मेरे प्रियतम ! अब मुझे अपने चरणोंमें बुला लीजिए.

वालाजी रे नीझर जल रे डुंगर झरे, नदी सर भरियां निवाण ।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखतां सूके प्राण ॥ ४

हे धनीजी ! पर्वतोंसे झरनोंका जल बह रहा है. नदी, सरोवर तथा नीचेके क्षेत्र जलसे भर गए हैं. किन्तु हे प्रियतम ! आपके प्रेमरूपी जलके बिना मेरे प्राण सूख रहे हैं.

वालाजी रे जीव मारो मुने दहे, अंग ते उपजे दाझ ।
अवगुण मारा छे अति घणां, तमे रखे मन आणो राज ॥ ५

हे प्रियतम धनीजी ! मेरा जीव मुझे जला रहा है. अंगोंमें विरहाग्नि प्रज्वलित हो रही है. मुझमें अनेकों अवगुण हैं, किन्तु हे श्रीराजजी ! आप उन्हें अपने मनमें मत लाइए.

श्रावण मासनी अस्टमी, कांई क्रस्न पखनी जेह ।
मुने ए रैणी वालाजी विना, घणुं दोहेली गई तेह ॥ ६

श्रावण मासकी कृष्ण पक्षकी यह अष्टमी (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) है, जब सब लोग आनन्दित होते हैं, किन्तु मेरे लिए यह रात्रि प्रियतमकी अनुपस्थितिमें असह्य हो गई है.

वालाजी रे एम तमे मोसुं कां करो, मारा हो प्राणनाथ ।
आवी करुं तमसुं गुझडी, मारी वीतकनी जे वात ॥ ७

हे प्रियतम धनी ! आप मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? आप मेरे प्राणनाथ हैं. मैं आपके पास आकर अपनी आपबीतीकी गुप्त बातें करूँगी.

वालाजी रे अस्टमी भादरवा तणी, कांई सुकल पखनी रात ।
ए रैणी रूडीय छे, मारा जनम संगाती साथ ॥ ८

हे प्रियतम धनीजी ! भादो मास शुक्ल पक्षकी अष्टमी (राधाष्टमी) भी आ पहुँची है. यह रात्रि अत्यन्त सुन्दर (रुचिकर) है, क्योंकि यह अष्टमी तो मेरे जन्मसङ्गी श्रीश्यामाजीके जन्मसे सम्बन्धित है.

वालाजी रे में तो एम न जाणियुं, जे मोसूं थासे एम ।
जो हुं जाणुं करसो विरहणी, तो कंठ बांहोंडी टालुं केम ॥ ९

हे प्रियतम ! मेरी ऐसी दशा होगी वह तो मैं जानती ही नहीं थी. यदि मुझे ज्ञात होता कि आप मुझे वियोगिनी बना देंगे तो अपने हाथ आपके कण्ठसे अलग ही नहीं करती.

वालाजी रे भादरवा मासनी चतुरदसी ,
कांई अति अजवाली थाय ।
एह समे नव सांचव्यो, मारुं तरवारे अंग तछाय ॥ १०

हे प्रियतम ! भाद्र शुक्ल चतुर्दशीकी रात्रि अति उज्ज्वल तथा आत्माको निर्मल बनानेवाली है. (इस दिन सद्गुरु धाम पधारे थे) इस समय मैंने सत्य सम्बन्धका पालन नहीं किया. अर्थात् सद्गुरुके साथ मेरी आत्मा नहीं चली गई, इसलिए मेरे अङ्ग तलवारसे छिले जा रहे हैं.

वालाजी ए रैणी रे सिधाविया, वालो पोहोंता ते धाम मंझार ।
एणे समे मुने एकली, तमें कांय राखी आधार ॥ ११

सद्गुरु इसी रात्रिको सिधार कर दिव्य परमधाम पहुँच गए. हे प्राणाधार ! उस समय आप मुझे अकेली क्यों छोड़ गए ?

वालाजी रे तमे तो घणुंए जणावियुं, पण में नव जाण्युं हुं अधम ।
जो हुं जाणुं थासे एवडी, तो तमने मूकुं केम ॥ १२

हे प्रियतम धनी ! आपने तो मुझे बहुत ही ज्ञान दिया था, किन्तु अधम होनेके कारण मैं उसे ग्रहण नहीं कर सकी, यदि मैं जानती कि मुझ पर इतनी बड़ी कठिनाई आएगी, तो मैं आपको कैसे छोड़ती ?

वालाजी रे चतुरदसी आसो तणी, कांई ब्रह्मांड थयो प्रकास ।
ए रजनी मुने एकली, तमे कांय मूकी निरास ॥ १३

हे प्रियतम धनी ! आश्विन मासकी चतुर्दशीके दिन (सद्गुरुका प्राकट्य (जन्म) दिन होनेके कारण) ब्रह्माण्ड प्रकाशित हुआ. परन्तु उस रात्रिको भी

हे नाथ ! आपने मुझे अकेली छोड़ कर निराश क्यों किया ?

वालाजी रे पूनम रातनो चांदलो, कांई वन सोभे अपार ।
रासनी रातनो ओछ्व, मुने कां न तेडी आधार ॥ १४

हे प्रियतम धनी ! पूर्णिमाकी रात्रिका चन्द्रमा वृन्दावनको अपार शोभा युक्त बना रहा है. अखण्ड रासकी रात्रिके उत्सवमें हे प्राणाधार ! मुझे क्यों नहीं बुलाया ?

वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणां ,
तमे रखे मन आणो धणी ।
व्रेहणी कहे मुने तम विना,
अम उपर थई छे घणी ॥ १५

हे प्राणवल्लभ ! मेरे अवगुण बहुत अधिक हैं किन्तु आप इनको मनमें न रखें. विरहिणी इन्द्रावती कहती है, हे धनी ! आपके बिना मुझ पर बहुत-कुछ बीत गई है.

वालाजी रे विनता व्रेहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष ।
जो जीव देह मूकी चालियो, तमे त्यारे थासो निरदोष ॥ १६

हे पिउजी ! मुझ अबलाको विरहिणी क्यों बना रहे हैं ? मुझ पर इतना अधिक रोष मत कीजिए. यदि जीव इस शरीरको त्याग कर चला जाएगा तो क्या आप निर्दोष माने जाएँगे ?

हवे चित आणी चरणे तेडजो, व्रेहणी टालो आधार ।
एणे वचने इन्द्रावतीने, वालो तेडी लेसे ततकाल ॥ १७

हे प्रियतम धनी ! अब मेरी दशाको देख कर मुझे अपने चरणोंमें बुला लें और मेरा वियोग दूर करें. इस प्रकारके नम्रतापूर्ण वचनोंको सुनकर प्रियतम धनी इन्द्रावतीको तत्काल बुला लेंगे.

प्रकरण २ चौपाई ३२

हेमंत रुत राग सिंधुडो

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप ।
रुत ने सीतल रे लागे मुने दोहेली, हवे मुने कां न तेडो प्राणनाथ ॥ १

हे प्रियतम धनी ! हेमन्त ऋतु आ पहुँची है. मेघ स्वयं अपने घर चले गए. यह शीत ऋतु मेरे लिए असह्य हो गई है. हे प्राणनाथ ! अब आप मुझे अपने पास क्यों नहीं बुला लेते ?

अंबरियुं थयुं रे वालाजी निरमल,
वादलियो गयो पोताने घेर ठाम ।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहणी ,
कां न भाजो रे रुदयानी हाम ॥ २

हे प्रियतम धनी ! अब आकाश स्वच्छ (निर्मल) हो गया है. बादल अपने-अपने स्थान पर चले गए हैं. अभी तक आप इस विरहिणीको नहीं संभाल रहे हैं. मेरे हृदयकी चाहनाको आप क्यों नहीं मिटा देते ?

हो दरसन ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाय ।
जुओ ने विचारी रे वालैया जीवसुं, कालजडुं मारुं मांहें कपाय ॥ ३

हे प्रियतम धनी ! मुझ पर दया कर दर्शन दीजिए, क्योंकि यह शीत ऋतु मुझसे सहन नहीं होती. हे प्रियतम ! हृदयसे तनिक विचारिए कि मेरा कलेजा भीतर ही भीतर कट रहा है.

नैणां ने तरसे रे वालाजीने निरखवा ,
श्रवणा तरसे वाणी रसाल ।
वाचा ने तरसे रे वालाजीसुं वातडी ,
जाणुं करी काढुं रुदयानी झाल ॥ ४

मेरी आँखें प्रियतम धनीको देखनेके लिए तरस रहीं हैं. मेरे कान आपकी रसपूर्ण वाणी सुननेके लिए तरस रहे हैं. मेरी जिह्वा प्रियतम धनीके साथ बातें करनेके लिए तरस रही है. मैं तो ऐसा मानती हूँ कि आपसे बातें कर मैं अपने हृदयकी दाहको शान्त कर पाऊँगी.

अंग ने तरसे रे वालाजीने भेटवा ,
जीव तरसे जोवा मांहेली जोत ।
जो पहेलुं ने जाणुं रे मोसुं थासे एवडी ,
तो निध हाथ आवी केम खोत ॥ ५

मेरे अङ्ग प्रियतमसे आलिङ्गनके लिए आतुर हैं. जीव अन्तर्ज्योतिको देखनेके लिए तड़प रहा है. यदि मैं पहलेसे ही यह जानती कि मुझ पर ऐसी बीतेगी, तो सद्गुरुरूपी निधिको मैं खोती ही क्यों ?

साथ ने मली बेसो छो ज्यारे सामटा ,
त्यारे अम विना तमने केम सुहाय ।
मुने रे मारा वालैया तम विना,
पल ने प्रलेकाल जेम थाय ॥ ६

इन्द्रावती नौ वर्षोंका वियोग याद कर कहती है, हे प्रियतम धनी ! जब आप समस्त सुन्दरसाथके साथ बैठते हैं तो मेरे बिना आपको कैसे सुहाता है ? हे मेरे प्रियतम धनी ! मुझे आपके बिना एक-एक पल भी प्रलयकाल जैसा लग रहा है.

अवगुण मारा रे वाला अति घणां ,
धणी बिना केहने कहुं मारा श्री राज ।
वालाजी विना रे अंग अगनी बले,
देह मांहें उपजे रे दाझ ॥ ७

मेरे अन्दर अत्यधिक अवगुण हैं. हे मेरे धनी श्रीराज ! आपके बिना अन्य किसके पास जाकर यह कहूँ ? प्रियतम धनीके बिना मेरे शरीरमें विरहाग्निके कारण अत्यन्त दाह उत्पन्न हो रही है.

वन ने छाह्युं रे वाला द्रुम वेलडी ,
सीतल धरा ने सीतल वाए ।
सीतल जल ने सीतल छांहेडी,
पण मारे अंग लागे अति दाहे ॥ ८

वृक्ष तथा लताओंसे वन आच्छादित है. इसके कारण धरती पर शीतलताका अनुभव हो रहा है, वायु भी शीतल बह रहा है. जल भी शीतल है और वृक्षोंकी छाया भी शीतल है, किन्तु मेरें अङ्गोंमें विरह वेदनाकी दाह अति तीव्र है.

हो दाझ ने भाजो रे वाला मारा अंगनी,
जेम मुने थाय करार ।
सुंदर धणी रे सोहामणां,
व्रह न खमाय जीवना आधार ॥ ९

हे प्रियतम धनी ! मेरे शरीरकी इस विरहाग्निके दाहको शान्त कीजिए, ताकि मुझे शीतलता प्राप्त हो. आप अत्यन्त सुन्दर हैं और सुखके दाता हैं. हे प्राणनाथ ! मेरा जीव अब आपके विरहका दुःख सहन नहीं कर पाता.

अणने जाण्यां रे दुख अनंत सह्यां ,
पण जाण्युं दुख केम खमाय ।
वालाजी विना रे हवे जे घडी ,
ते तां जीवने कठण घणुं जाय ॥ १०

अज्ञान अवस्थामें तो मैंने अनन्त दुःख सहन किए किन्तु समझ आने पर ये दुःख कैसे सहूँ ? प्रियतम धनीके बिना अब तो एक घड़ी बिताना भी इस जीवके लिए कठिन हो गया है.

विषम व्रह रे वालैया आ रुतनो ,
ते तो सुखम थाय मले जीवन ।
हवे ने कहो रे वालैया तेम करुं,
जीव दुख पामे रे मन ॥ ११

हे वल्लभ ! यह ऋतु विरहिणीके लिए अति विषम है. वह तो तभी सुखमय होगी जब जीवको प्राणाधार मिले. अब तो हे प्रियतम ! आप जो कहेंगे मैं वैसा ही करूँगी, क्योंकि मेरा जीव (मन) अत्यन्त दुःखी हो रहा है.

दीपनो मेलो रे ओछव अति भलो ,
जिहां सिणगार करो धणी सर्वसाथ ।
एणे रे समे वाला मुने तेडजो ,
जेम आवीने मलुं मारा प्राणनाथ ॥ १२

दीपावलीका उत्सव अति सुन्दर है. ऐसे समय पर सब सुन्दरसाथ धनीजीके साथ शृङ्गार धारण करते हैं. हे प्रियतम ! ऐसे समय पर आप मुझे बुला लीजिए ताकि मैं आपसे आकर मिल सकूँ.

साथ ने सुणो रे कहुं एक वातडी,
धणी मुने देतां केटलुं मान ।
ए सुख मांहेंथी काढी करी,
करमे दीधुं ततखिण रान ॥ १३

हे सुन्दरसाथजी ! मैं एक बात कह रही हूँ, आप उसे सुनिए. मेरे स्वामी मुझे कितना ज्यादा सम्मान देते थे ? किन्तु मेरे कर्मोंने मुझे उन सुखोंसे बाहर खींचकर तत्क्षण निर्जन स्थान (हब्सा) में बन्द कर दिया.

रणवगडामां साथ हुं एकली, विलखुं रात ने दिन ।
जो कोई मानो तो कहे इन्द्रावती, रखे कोई करो भारे करम ॥ १४

मरुभूमि जैसे निर्जन स्थानमें मैं अकेली ही रात-दिन विलख रही हूँ. इन्द्रावती कहती है, यदि कोई मेरी बात माने तो कोई भी मेरे जैसे बड़े अवगुण न करे.

आ वस्ती वसे सुन्दर सोहामणी, धणी बेठा नवतनपुरी मांहें ।
एह ज पुरी मांहें अमे रहुं, पण करमे न दिए मेलो क्यांहे ॥ १५

इन्द्रावती नौ वर्षका वियोग याद कर कहती है, यह नवतनपुरी धाम अत्यन्त सुन्दर और सुहावना है, मेरे धामधनी सद्गुरु यहाँ विराजमान हैं. मैं भी इसी नवतनपुरीमें रहती हूँ, किन्तु मेरे कर्मबन्धनोंने धनीजीके साथ मेरा मिलन नहीं होने दिया.

अनेक विधे रे साथ हुं विलखती ,
पण मेलो न थाय एक खिण ।
ए अचरज तमे जुओ साथजी,
करम तणां रे ए छे गुण ॥ १६

हे सुन्दरसाथजी ! धनीजीको मिलनेके लिए मैं अनेक प्रकारसे विलाप करती हुई दुःखी हो रही हूँ, परन्तु एक क्षणके लिए भी सद्गुरुसे मिलन नहीं हो रहा है. हे सुन्दरसाथजी ! आप इस आश्चर्यको तो देखो, यह सब कर्मोंका ही प्रभाव हैं.

वली ने वसेके रे वज्रलेपणां, मारा जेम करजो मा कोय ।
एह ज पुरी मांहे अमे रहतां, रणवगडा जुओ केम होय ॥ १७

विशेषतः यह घटना वज्रलेपकी भाँति अमिट बन गई. मेरे जैसे अवगुणोंसे भरे कर्म (सद्गुरुके प्रति) कोई मत करना, क्योंकि इसी नवतनपुरीमें रहते हुए भी मुझे किस प्रकार वीरान भूमिका-सा अनुभव हो रहा है अर्थात् सद्गुरुके वियोगके कारण मैं अकेलेपनका अनुभव कर रही हूँ.

एणे सरवे वज्रलेपणां, दुख ने दीठां रे अनेक ।
हवे ने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप ॥ १८

इस समय तो मैंने वज्रलेप जैसे अनेक दुःख देखे हैं. हे प्रियतम धनी ! अब मुझ पर कृपा कीजिए, ताकि मेरे ये अमिट वज्रलेप जैसे कर्म टल जाएँ.

दयाने रखे तमे विसारो, इन्द्रावती अलवी रे थाय ।
एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लागसे पाय ॥ १९

हे प्रियतम धनी ! आप अपनी दया न भूलें. इन्द्रावती अत्यन्त व्याकुल हो रही है. इन दीन वचनोंको सुन कर मेरे धनीजी मुझे बुलाएँगे, उनकी यह अंगना उनके श्रीचरणोंमें प्रणाम करेगी.

प्रकरण ३ चौपाई ५१

सीत रुत पीउजी तम विना ,
मुने अति अलखामणी थाय , हो वालैया ।
वाय रे उतर केरो वावरो, ते तां मारे तरवारे घाय, हो वालैया ॥ १

हे प्रियतम धनी ! आपके बिना यह शरद ऋतु अति नीरस (आह्लादहीन) लग रही है. उत्तर दिशा (हिमालय) की ओरसे ठण्डी हवा उन्मत्त हो बह रही है. यह वायु तलवारके घावकी भाँति मेरे अंगोंको विदीर्ण कर डालता है.

हो टाढी ने रुत रे वालाजी सीतनी, टाढी ने भीनी थाय रात ।
एणी रुते केम विसारिए, अरधांग तमारी प्राणनाथ ॥ २

हे प्रियतम धनी ! यह शरद ऋतु अति ठण्डी है. रात्रिमें ठण्डक और मादकता आ जाती है. ऐसी ऋतुमें आपने मुझे क्यों भुला दिया ? हे प्राणनाथ ! मैं तो आपकी अर्धांगिनी हूँ.

सीत रुते जल जोनी जामिया, तमे हजिए न ल्यो मारी सार ।
जीवने काया नहीं तो मूकसे, ते तमे जोसो निरधार ॥ ३

इस शिशिर ऋतुमें पानी भी जम कर बर्फ बन गया है, किन्तु अब भी आप मेरी सम्हाल नहीं करते. यदि आप मुझे नहीं सम्हालेंगे तो जीव इस कायाको छोड़ देगा. आप यह निश्चित देखेंगे.

दुख ने दोहेलां घणां भोगव्यां, पण व्रह दुख में न खमाय ।
जीवडो रुए निस दिन पीउ विना, आंसुडा ते अंग न माय ॥ ४

मैंने अनेक भीषण दुःख भोगे हैं, किन्तु विरहका यह दुःख मुझसे सहन नहीं होता. प्रियतमके बिना मेरी आत्मा दिन रात रो रही है और आँखोंमें आँसू रुकते ही नहीं हैं.

जल ने सीतल नैणे वही गयां, हवे अगिन थै अति जोर ।
निस्वासा जेम धमण धमे, बलतो जीव करे रे बकोर ॥ ५

शीतल जल आँखोंसे बह गया और अब विरहाग्नि अधिक प्रबल हो गई

है. धौंकनीकी तरह श्वास चल रहीं हैं और दुःखतप्त यह जीव वारंवार आपको ही पुकार रहा है.

एवी टाढी रुते दंतडा खडखडे, अंग चामी चरमाय ।
एक ने पीउजी तम विना, कै कै आवटणी थाय ॥ ६

ऐसी शीत ऋतुमें दाँत भी किटकिटा रहे हैं. शरीरकी त्वचा पर छाले पड़ गए हैं. हे प्रियतम ! एक आपके बिना मुझे कितने कष्ट उठाने पड़ रहे हैं.

सीत रुते पत्र जेम हारव्यां, जेम वसंत विना वनराय ।
रंग ने रूप रुत हरी लिए, पछे सूकीने भाखरीया थाय ॥ ७

जिस प्रकार शीत ऋतु सब पेड़ोंके पत्ते झाड़ देती है, और जैसी वसंत ऋतुके बिना वनसृष्टिकी दशा होती है, ये ऋतुएँ वनस्पतिके रूप तथा रंगको हरण कर लेतीं हैं और बादमें वे सूख कर चूर-चूर बन जाती है. उसी प्रकार सद्गुरुके वियोगमें इस समय मेरी भी वैसी ही दशा हो रही है.

आ रुते अगनी जोर बले, वाय ने अगिन टाढी वाए ।
हेमने पडे रे बले सरव वनसपती, वली ने वसेके दाझे दाहे ॥ ८

तेम मारा जीवने तम विना, आ रुत एणी पेरे जाय ।
हवे रखे राखो खिण तम विना, हुं वली वली लागुं छुं पाय ॥ ९

इस ऋतुमें विरहाग्नि अति तीव्रतासे भड़क उठती है. ठण्डी बर्फ जैसी तीव्र हवाके बहने पर शरीर गलने लगता है. हिमपात होने पर पूरी वनस्पति सूख कर पत्ते झाड़ देती है और यदि उसमें आग लग जाए तो वह विशेष प्रकारसे जलने लग जाती है. हे प्रियतम ! आपकी अनुपस्थितिमें मेरे जीवके लिए यह शीत ऋतु उसी प्रकार गुजर रही है. अब एक क्षणके लिए भी आप मुझे अपनेसे अलग मत करना. इसलिए मैं वारंवार आपके चरण कमलोंमें नतमस्तक होकर प्रार्थना करती हूँ.

ए रुत वाला मुने एम थई, हजी दया तमने न थाय ।
नौतनपुरी मेलो केम थासे, ज्यारे जीव निसरीने जाय ॥ १०

हे प्रियतम ! यह ऋतु मेरे लिए ऐसी दुःखदायी बन गई है, फिर भी आपको

मुझ पर अभी तक दया क्यों नहीं आई ? जब मेरे प्राण ही इस शरीरसे निकल जाएँगे तो नवतनपुरीमें आपके साथ मिलाप कैसे होगा ?

मायानो मेलो घणुं दुर्लभ, नहीं आवे ते बीजी वार ।
रखे जाणे माया मेलो न थाय, ते माटे करुं छुं पुकार ॥ ११

इस मायामें हमारा इस प्रकार मिलन होना अति दुर्लभ है. ऐसा अवसर दुबारा प्राप्त नहीं होगा. इस मायावी संसारमें इस प्रकारका मिलन फिर नहीं होगा. इसलिए मैं (मिलनेके लिए) पुकार कर रही हूँ.

मुं व्रेहणीनो व्रह भाजजो, तमे छो दयावंत ।
वलवलती करुं विनती, पछे आवसे ते मारो अंत ॥ १२

हे धामधनी ! आप तो दयालु हैं. मुझ विरहिणीका विरह-वियोग दूर कीजिए. विरहाग्निमें तप कर तड़पती हुई मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ अन्यथा मेरा अन्त ही आ जाएगा.

वेल थासे जो ए वातनी, ते तां दुख करसो निरधार ।
जो जीव काया मूकी चालसे, पछे करसो कायानी सार ॥ १३

इसमें यदि विलम्ब होगा तो अवश्य आपको पश्चात्तापका दुःख होगा. यदि जीव शरीर छोड़ कर चला जाएगा, तो बादमें क्या आप इस मृत शरीरको सम्हालेंगे ?

जीवने निसरतां घणुं सोहेलुं, कांई दुख ना उपजे लगार ।
पण विमासी जो विचार करुं, तो माया मेलो केम छाडुं आधार ॥ १४

जीवका इस शरीरसे निकल जाना बहुत ही सरल है इसके कारण (मुझे) जरा-सा भी दुःख नहीं होगा. परन्तु यदि विवेक पूर्वक विचार करती हूँ तो मुझे यह विचार आता है कि इस मायावी संसारमें धनीजीका मिलन कैसे छोड़ दूँ ?

हवे क्रपाने सागर तमे क्रपा करो, जेम आवीने भीडुं अंग ।
मुं व्रेहणीना रे वालैया, मुने तेडीने रामत करो रंग ॥ १५

हे करुणाके सागर ! आप अब मुझ पर कृपा कीजिए, ताकि मैं आपके पास आकर गलेसे लग जाऊँ. हे प्रियतम ! मुझ विरहिणीको बुला कर प्रेमानन्द पूर्ण रामत कीजिए.

जो तमे भीडो जीवने जीवसुं, तो भाजे मारा अंगनी दाझ ।
जीव थाय मारो सकोमल, जेम वसंत मोरे वनराय ॥ १६

यदि आप मुझे अपने अङ्गसे लगाएँगे तो मेरे अन्तरकी दाह दूर हो जाएगी. जिस प्रकार वसन्त ऋतुमें वृक्षों पर नई कोमल कोपलें निकलतीं हैं उसी प्रकार मेरा जीव अत्यन्त कोमल बन गया है.

वसंत आवे वन विलंम करे, मारो जीव मोरे ततकाल ।
मुने जेणी खिणे वालोजी मले, हुं तेणी खिण लऊं रंग लाल ॥ १७

वसन्त ऋतु आने पर वृक्षोंको पल्लवित होनेमें विलम्ब हो सकता है परन्तु मेरा जीव आपको प्राप्त करते ही तत्क्षण खिल उठेगा. मुझे जिस क्षण मेरे प्रियतम धनी मिल जाएँगे, उसी क्षण मैं लालिमा युक्त हो जाऊँगी.

जेम रंग लिए रे ममोलो, मेह बूठे ततकाल ।
तमने मले हुं रंग एम लऊं, इन्द्रावतीना आधार ॥ १८

जिस प्रकार वर्षा होते ही ममोला (वीर बहूटी) नामका कीड़ा रंग बदल देता है, उसी प्रकार हे इन्द्रावतीके प्राणाधार ! आप जिस क्षण मुझे मिल जाएँगे मैं भी उसी क्षण लाल (प्रेम) रंगमें रंग जाऊँगी अर्थात् प्रेमविभोर हो जाऊँगी.

इन्द्रावती आयत करे, मलवाने उलास ।
एणे वचने वालोजी तेडसे, जै करसुं वालाजीसुं विलास ॥ १९

इन्द्रावती उल्लासपूर्वक आपको मिलना चाहती है. इन वचनोंको सुन कर प्रियतम अवश्य बुलाएँगे. मैं प्रियतमके पास जाकर आनन्द-विलास करूँगी.

प्रकरण ४ चौपाई ७०

रुतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रुत रलियामणी ।
तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी रे ॥ १

हे प्रियतम ! रमणीय वसन्त ऋतु आ पहुँची है. हे मेरे धामधनी ! आपके बिना तो यह ऋतु भी दुःखदायिनी (अरुचिकर) लगती है.

तमे पडदा पाछा कीधा पछी, वली आवी ते आ वसंत ।
ते पछी तमसुं रमवानी, लागी छे खरी मुने खंत ॥ २

आपके अन्तर्धान होने (परदेके पीछे चले जाने) पर यह वसन्त ऋतु पुनः आ गई. पुनः मेरे मनमें आपके साथ गुलालके रंगोंसे खेलनेकी लालसा जागृत हुई है.

हवे ततखिण तेडजो मारा वाला, आ रुत एकला न जाय ।
धणी विना कामनी घणुं कलपे, रोतां ते वाणुं वाय ॥ ३

हे प्रियतम धनी ! अब मुझे तत्क्षण बुला लीजिए. आपके बिना यह ऋतु अकेले कैसे व्यतीत होगी ? जिस प्रकार स्वामीके न रहने पर कामिनी विलखती है, उसी प्रकार आपके वियोगमें रोते-रोते मुझे भोर हो (सारी रात आँखोंमें ही निकल) जाती है.

दिन दोहेला जाय घणुं मुने, वली वसेके वसंत ।
ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीवने वहंत ॥ ४

मेरे लिए अब दिन व्यतीत करना दुष्कर हो गया है. विशेष रूपसे वसन्त ऋतु अधिक दुःखदायी है. हे मेरे प्रियतम ! आप मेरी दशा जानते ही हैं कि मैं किस प्रकार जीवको धारण कर बैठी हूँ.

रुत मांहें रुत वसंत घणुं रूडी, जेमां मोरे वनराय ।
विध विधनां रंग ले रे वेलडियो, वन तणे कंठ वलाय ॥ ५

सब ऋतुओंमें वसन्त ऋतु सर्वाधिक सुन्दर है. इस ऋतुमें सभी वन-उपवन खिल उठते हैं. लताएँ विभिन्न प्रकारके रंग धारण कर वृक्षोंके गले लिपट जातीं हैं.

एणी रुत एकलडी मुने, केम मूको छो प्राणनाथ ।
जीव सकोमल कुंपल मेले, रमवा स्यामलियाने साथ ॥ ६

हे प्राणाधार ! इस ऋतुमें आप मुझे अकेली क्यों छोड़ रहे हैं ? सद्गुरु धनी (श्यामसुन्दर) के साथ खेलनेके लिए मेरी आत्मामें प्रेमानन्द रूपी कोमल कोपल फूट निकली है.

अमृत वा वाय वसंतनो, लहेरो लिए वनराय ।
ए रुत देखी जीवन विना, ते मारे जीवे न खमाय ॥ ७

अमृत जैसा अखण्ड सुख देनेवाली वसन्तकी शीतल हवा बह रही है, जिससे वनराजि झूम रही है. हे मेरे जीवन ! यह ऋतु आपके बिना इस जीवसे सहन नहीं होती.

हवे केही विध करुं रे वाला, तमे कां थयां मोसुं एम ।
मुने मेली एकलडी, तमे बेससो करारे केम ॥ ८

नौ वर्षके वियोगको ध्यानमें रखकर इन्द्रावती कहती है, हे धनीजी ! अब मैं क्या करूँ, आप मुझसे ऐसे क्यों दूर हुए हैं ? मुझे अकेली छोड़ कर आप कैसे शान्त चित्त रह सकते हैं ?

जो अनेक अवगुण होय मारा, तोहे तमे लेसो सार ।
अमे कलपतां तमे दुखासो, ते नेहेचे जाणो निरधार ॥ ९

यद्यपि मुझमें अनेक अवगुण हो फिर भी आपको मुझे सम्हालना ही होगा. मुझे इस प्रकार विलाप करते देख कर आप दुःखी होंगे, यह तो आप निश्चित ही समझें.

में मारा करम भोगवतां, दीठां ते दुख अति घणां ।
पण मारुं दुख देखी तमे दुखाणां, मुने ते दुख साले तम तणां ॥ १०

मैंने अपने कर्मफल भोगते हुए कई दुःख देखे हैं और उनका अनुभव भी किया है. परन्तु मेरा दुःख देख कर आप जिस प्रकार दुःखका अनुभव कर रहे हैं वह मुझे ज्यादा खटकता है.

साथ मांहें आवी मारा वाला, अंतराय कीधी मोसुं एह ।
आकार तमारो अम समोजी, दुख सुख देखे देह ॥ ११

हे मेरे स्वामी ! सुन्दरसाथके बीच आकर भी आपने मुझसे ऐसी दूरी रखी. आपका और मेरा आकार (मायावी शरीर) एक-सा ही है. देह भी दुःख सुखका अनुभव करती है.

अंतरगत आवी मारा वाला, बेठा छो आकार मांहे ।
आकार देह धरयो मायानो, ते माटे कोणे न ओलखाए ॥ १२

हे प्रियतम धनी ! आप तो साक्षात् स्वरूप होते हुए भी शरीरके अन्दर छिपे हुए है. आपने मायाका शरीर धारण किया हुआ है. इसलिए आप किसीसे पहचाने नहीं जाते.

ए आकार धरी अम मांहें, बेठा छो अंत्रीख ।
पण केम छाना रहो तमे अमथी, अमे तमारा सरीख ॥ १३

ऐसा मायावी शरीर धारण कर आप हमारे बीच आए हैं, वस्तुतः आप परमधाममें ही बैठे हैं. अब आप हमसे कैसे छिपे रह पाएँगे. अब तो आपने मुझे अपने समान बना दिया है.

हवे में तमने दीठां जुगते, ओलखिया आधार ।
ते माटे तमे तेडजो ततखिण, मलो तो थाय करार ॥ १४

अब मैंने आपको युक्ति पूर्वक देख लिया है तथा अपने प्राणाधार धनीको पहचान लिया है. इसलिए अब आप मुझे तत्क्षण बुला लीजिए. मिलन होने पर ही मुझे शान्तिका अनुभव होगा.

हुतासनीनो ओछव अति रूडो, आवी रमुं अबीर गुलाल ।
चोवा चंदन अनेक अरगजा, हुं छांटी करुं वालाजीने लाल ॥ १५

होलीका उत्सव अत्यन्त मोहक है. इस अवसर पर आपके साथ अबीर और गुलालसे खेलनेका मन करता है. चन्दन तथा अनेक प्रकारके सुगन्धित द्रव्य छिड़क कर मैं प्रियतमको लाल रंगसे रंग दूँ, ऐसी अभिलाषा मनमें बना रखी है.

सुन्दरसाथ मलीने रमिये, वालाजीसुं रंग अपार ।
लोपी लाज रमुं हुं तमसुं, इन्द्रावतीना आधार ॥ १६

समस्त सुन्दरसाथ एकत्रित होकर प्रियतमके साथ आनन्द मग्न होकर होली खेल रहे हैं. मैं भी आपके साथ लोक लाज छोड़ कर होली खेलना चाहती हूँ क्यों कि आप इन्द्रावतीके प्राणाधार हैं.

हवे वहेली ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माय ।
सुन्दर धणी मारा रे तमने, हुं आवीने जीतुं तेणे ताय ॥ १७

हे मेरे प्रियतम ! अब मुझे तुरन्त ही बुला लीजिए. क्योंकि आपके साथ होली खेलनेकी मेरी आकांक्षा (उत्साह) मेरे अङ्गोंमें नहीं समाती है. हे मेरे सुन्दर धनी ! मैं आकर आपको इसी समय जीत लूँ (प्रेमके वशीभूत कर लूँ.)

इन्द्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम ।
एणे वचने ततखिण मुने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हाम ॥ १८

इन्द्रावती आपकी अर्धांगिनी है और आपके बिना विलाप कर रही है. ये वचन सुनकर प्रियतम मुझे तुरन्त ही बुला लेंगे. आपसे मिलकर मैं अपनी अभिलाषाएँ पूर्ण करूँगी.

प्रकरण ५ चौपाई ८८

रुत ग्रीषमनी-राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीषम हो ॥ (टेक) ।
रुत ग्रीषम वालाजी विना रे, घणुं दोहेली जाय ।
पीउजी विना हुं एकली, खिण वरसा सो थाय ॥ १

इन्द्रावती कहती है, प्रियतम धनीके बिना यह ग्रीष्म ऋतु अत्यन्त दु:खदायी (कष्टप्रद) हो कर बीतेगी. धामधनीके बिना मुझे एकक्षण भी सौ वर्षके समान लगता है.

ग्रीषमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियो सोहे वनराय ।
फूल फल दीसे रे अति उतम, एणी रुते वन सुहाय ॥ २

हे प्रियतम ! ग्रीष्म ऋतु आ पहुँची है. वनमें लताएँ और वनस्पति शोभा दे रहे हैं. फल-फूल आदि अति सुन्दर दिखाई देते हैं. इस प्रकार इस ऋतुमें वन सुहावना लगता है.

घाटी छाया सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल अपार ।
एणी रुते मारा वालैया, मुने तेडीने रमजो आधार ॥ ३

वनके वृक्षोंकी सघन छाया शोभा दे रही है. रंग विरंगे फूलोंमें सुगन्धि भरी हुई है. हे प्रियतम धनी ! इस ऋतुमें मुझे बुला कर मेरे साथ प्रेमपूर्ण रामत कीजिए.

रमवाने जीव तरसे मारो, रूडी रमवानी आ रुत ।
खंत खरी मलवानी तमसुं, लागी रही छे मारे चित ॥ ४

मेरा जीव आपके साथ रमण करनेके लिए प्यासा हो रहा है. रामत (रमण) के लिए यह ऋतु अति सुन्दर (अनुकूल) है. मेरे अन्तःकरणमें आपसे मिलनेकी उत्कण्ठा जागृत हुई है.

कोएलडी टहूंकार करे रे, सूडला करे रे कलोल ।
एणी रुते हुं एकलडी, रोई नैणा करुं रंग चोल ॥ ५

कोयल मधुर स्वरसे कूक रही है, तोते भी प्रेमोन्मत्त होकर कलोल कर रहे हैं. ऐसी ऋतुमें अकेली पड़ी हुई मैं रो-रो कर नयनोंको लाल बना रही हूँ.

वांदर मोर क्रीडे वनमां, आनंद देखी वनराय ।
एणे समे वालाजी विना, व्रहसुं कालजडुं रे कपाय ॥ ६

वनमें वानर और मयूर क्रीड़ा कर रहे हैं. वनकी सुन्दर शोभा देख कर वे आनन्दमें मग्न हैं. ऐसे समय प्रियतम धनीके बिना मेरा कलेजा विरह वेदनाके कारण फटा जा रहा है.

भमरा मदया करे रे गुंजार, लई फूलडे बेहेकार ।
एणी रुते धणी धाम विना, घडी एक ते केमे न जाय आधार ॥ ७

फूलोंसे सुगन्ध लेकर भँवरे मदमस्त हो कर गूँज रहे हैं. इस ऋतुमें धामधनीके बिना हे प्राणाधार ! एक घड़ी भी नहीं बीत रही है.

एणी रुते अमने नव तेडो, तो जीव घणुं दुखी थाय ।
दिन दोहेला घणुंए निगमुं, पण रैणी ते केमे न जाय ॥ ८

ऐसी ऋतुमें यदि हमें नहीं बुलाएँगे तो मेरे जीवको बहुत दुःख होगा. दिवस तो चाहे जैसे तैसे बिता देती हूँ किन्तु रात्रि तो किसी भी प्रकारसे नहीं बीतती है.

कठणाई एवी कां करो वाला, हजी दया तमने न थाय ।
बीजां दुख अनेक खमुं, पण धणीनो व्रह न खमाय ॥ ९

हे नाथ ! आप इतने कठोर क्यों बन गए हैं. क्या अब भी आपके मनमें मेरे प्रति दया भाव नहीं है ? मैं अन्य दुःख तो सह लेती हूँ किन्तु प्रियतम धनीका विरह असह्य हो जाता है.

कलकले जीव ने कांपे काया, करे निस्वासा निस दिन ।
नैणे जल आवे निझरणां, कोई अखूट थया उतपन ॥ १०

इस विरह-वेदनाके कारण मेरा जीव दुःखी है और काया काँप रही है, रात-दिन निःश्वास निकल रहे हैं. ऐसा प्रतीत होता है, मानों आँखोंसे आँसुओंकी अविरल धारा बह रही है.

एक निस्वासे जीव निसरे, पण दुख खमुं छुं ते जुए विचार ।
ते विनती करुं रे वाला, सुणो इन्द्रावतीना आधार ॥ ११

एक निःश्वासके साथ ही मेरा जीव निकल सकता है. फिर भी इसलिए दुःख सहन कर रही हूँ कि इसे देख कर आप मेरे लिए कुछ सोचेंगे. इसलिए मैं यह प्रार्थना कर रही हूँ, हे इन्द्रावतीके प्राणाधार ! आप मेरी पुकारको अवश्य सुनिए.

देखे जीव दुख घणुं दुरलभ, मेलो धणीनो आ वार ।
श्री धाम मधे मेलो सदीवे, पण दुरलभ मेलो संसार ॥ १२

मेरे जीवने बहुतसे असहनीय दुःख देखे हैं. यह समय धनीजीके मिलनेके लिए है. दिव्य परमधाममें तो मिलना सदैव होता है किन्तु इस मायावी संसारका मिलाप दुर्लभ है.

नौतनपुरीमां धणी मलवाने, जीव न मूके काया ।
धणीनो विछोडो घेर खिण नहीं, विछोडो मेलो मांहें माया ॥ १३

नवतनपुरीमें धामधनी सद्गुरुसे मिलनेके लिए यह जीव शरीर नहीं छोड़ रहा है. अखण्ड परमधाममें क्षणभरके लिए भी धामधनीका वियोग नहीं होता. वियोग और मिलन तो इस मायावी संसारमें ही है.

आ मेलो दुर्लभ ते माटे, नहीं आवे बीजी वार ।
ते माटे जीव कलपे मारो, नौतनपुरी मलवा आधार ॥ १४

इस प्रकारका मिलाप होना अति दुर्लभ होता है. ऐसा अवसर (मनुष्य जीवन) दुबारा प्राप्त होने वाला नहीं है. इसी कारण मेरा जीव नवतनपुरीमें मेरे जीवनाधारको मिलनेके लिए व्याकुल हो रहा है.

हवे न थाय मेलो श्री देवचन्द्रजीसुं, जो कीजे अनेक उपाय ।
घरे मेलो अभंग छे, पण नौतनपुरीए न थाय ॥ १५

अब अनेक उपाय करने पर भी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके साथ मिलाप होने वाला नहीं है. दिव्य परमधाममें तो अखण्ड मिलन है किन्तु नवतनपुरीमें उनके साथ पूर्ववत् मिलन नहीं हो रहा है.

सुन्दर श्रीमुख वचन सांभरे, त्यारे जीवने कालजे लागे घाय ।
पण चूकी अवसर जो हुं पहेली, तो न आवे हाथ ते दाय ॥ १६

सद्गुरुके श्रीमुखसे निकले हुए मधुर वचनोंको जब याद करती हूँ तो कलेजा फट जाता है. किन्तु अब क्या करूँ ? पहले ही अवसर चूक गई हूँ, अब वह पुनः हाथ आनेवाला नहीं है.

हवे कलकलीने कहुं छुं रे वाला, मुने तेडजो चरणे ।
तेहने छेह केम दीजिए रे वाला, जे आवी ऊभी सरणे ॥ १७

अब तो मैं व्याकुल हो कर कहती हूँ, हे मेरे प्रियतम धनी ! आप मुझे अपने चरणोंमें बुला लें. हे नाथ ! जो आपके आश्रयमें आकर खड़ी है, उसको आप कैसे त्याग देंगे ?

हवे व्रह वीटी विनता कहे, रखे खिण लावो वार ।
अमने आवी तेडी जाओ, जेम लऊं लाभ मांहें संसार ॥ १८

अब विरह वेदनासे घिरी हुई यह वनिता कहती है, हे स्वामी ! अब क्षणभरका भी विलम्ब मत कीजिए. आप स्वयं आकर मुझे अपने साथ ले चलें ताकि मैं इस मायावी संसारमें आपके मिलनका लाभ ले सकूँ.

आ मायानो मेलो छे दुरलभ, जुओने विचारी मन ।
लउं लाभ मलीने तमने, जेम सहु कोई कहे धन धन ॥ १९

मायाका यह मिलाप अति दुर्लभ है. इस तथ्यको मनसे विचार करके देखें. आपके साथ मिलन होनेके बाद मैं भी आनन्दका लाभ ले लूँ ताकि सब कोई हमारे मिलनकी प्रशंसा करें.

अणजाण्युं धन गयुं रे अनंत, पण जाण्युं ते धन केम जाए ।
जे निध गई अचेत थकी, हुं दाझुं ते तेणी दाहे ॥ २०

अनजानेमें ही सद्गुरुरूपी अनन्त धन चला गया, किन्तु अब जानकारी होने पर वह मेरे हाथोंसे कैसे निकल जाएगा ? अज्ञानावस्थामें जो अखण्ड निधि हाथोंसे निकल गई अर्थात् सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजीका धामगमन हो गया. मैं उस दुःख (दाह) से जल रही हूँ.

इन्द्रावती कहे आयत करी, एक वार तेडो अमने ।
जेम उलट करुं अति घणो, आवीने जीतुं तमने ॥ २१

इन्द्रावती बड़ी चाहके साथ प्रार्थना करती है कि मुझे एक बार तो बुला लें

ताकि अत्यन्त परमानन्द प्राप्त कर सकूँ तथा आकर आपके हृदयको जीत लूँ.

में अनेक वार जीत्यो छे आगे, ते तो जाणो छो चित मांहे ।
ते माटे मोसुं करो रे अंतर,पण नाठ्या न छूटसो क्यांहे ॥ २२

इससे पूर्व भी (व्रज, रासमें) मैंने अनेक बार आपको जीता है, इसे तो आप जानते हैं. संभवतः इसलिए आप मुझसे दूरी रखते हैं. किन्तु आप इस प्रकार भाग कर मुझसे छूट नहीं पाएँगे.

हुं जोर करीने ज्यारे आवीस इहां, त्यारे तमे करसो केम ।
एणे वचने इन्द्रावतिए, वालोजी कीधां छे नरम ॥ २३

जब मैं बल पूर्वक आपके पास आऊँगी तो आप क्या करेंगे ? इन्द्रावतीने इस प्रकारके विनम्र वचनों द्वारा प्रियतम धनीके हृदयको कोमल बना दिया.

हवे ततखिण तेडवा धणी आवसे, वाले सांभलिया समाचार ।
ए वचन सुणीने इन्द्रावतीने, वालो रुदयासुं भीडसे आधार ॥ २४

अब प्रियतम धनी तत्क्षण मुझे लेने आएँगे, क्योंकि उन्होंने सब समाचार (वृत्तान्त) सुन लिए हैं. इन वचनोंको सुन कर प्राणाधार प्रियतम इन्द्रावतीको हृदयसे लगा लेंगे.

प्रकरण ६ चौपाई ११२

अधिकमास-राग धन्यासरी

सुणो ने वालैया, कहुं मारी वीतक वात ।
आवडां ने दुख तमे कां, दीधां रे निघात ॥ १

हे प्रियतम ! सुनिए, मैं आपसे अपनी आपबीती कह रही हूँ. आपने मुझे इतने ज्यादा दुःख क्यों दिए ?

रुत सघली रे हुं घणुं कलपी, पण वालैए न लीधी मारी सार ।
न जाणुं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार ॥ २

मैंने सब ऋतुओंमें बहुत विलाप किया, किन्तु हे प्रियतम ! आपने मेरी

सम्हाल तक नहीं ली. मैं नहीं जानती कि इस अवस्थामें भी आपने मेरे जीवको क्यों टिकाए रखा, अन्यथा उसके टिके रहनेकी कोई संभावना ही नहीं थी.

सनेह वालाजीनो संभारतां, एक निस्वासे जीव जाए ।
पण ए न जाणुं तमे केही विध करीने, जीव राख्यो काया मांहे ॥ ३

प्रियतम धनीका प्रेम तथा मूल सम्बन्ध याद आते ही एक ही श्वासमें जीव (प्राण) निकल जाता. किन्तु मैं नहीं जानती कि इस शरीरमें आपने जीवको कैसे टिकाए रखा ?

ज्यारे जीव हुतो निद्रा मांहें, तेनो ते जुओ विचार ।
पण ज्यारे निद्रा उडाडी धणिए, त्यारे केम रहे विना आधार ॥ ४

जब मेरा जीव निद्राधीन (अज्ञानतामें) था तब तक तो ऐसा विचार किया जा सकता था. किन्तु जब मेरे धनीने तारतम ज्ञान द्वारा निद्राको उड़ा दिया तब वह उनके बिना कैसे रह सकता है ?

आपोपुं ओलखावी करी, आप रह्यां अंत्रीख ।
पडदा पाछा कीधा पछी, न जाणुं जीव राख्यो केही रीत ॥ ५

अपनी पहचान करवा कर हे धनी ! आप अन्तर्धान हो गए. परदा करनेके (धामगमनके) बाद न जाने आपने मेरा जीव (प्राण) कैसे रखा ?

नहीं तो ए निध दीठा पछी, खिण एक अंतर न खमाय ।
विध सघली दीसे तम मांहें, ओवारणे इन्द्रावती जाय ॥ ६

अन्यथा तारतम ज्ञान (रूपी निधि) प्राप्त करनेके बाद एक क्षणका भी वियोग सहन नहीं होता. आत्म-साक्षात्कारकी सब विधियाँ आपकी अन्तरात्मामें दीखती हैं, इसलिए इन्द्रावती अपने प्रियतम धनी पर सब कुछ न्योछावर करती है.

षटरुत वालाजी रे वही गई, तेना थया ते बारे मास ।
एवडो व्रह केम दीधो रे वालैया, तमने हजी न उपजे त्रास ॥ ७

हे प्रियतम धनी ! छः ऋतुएँ तो चली गईं, जिसके बारह महीने होते हैं.

इतने लम्बे समयका वियोग आपने क्यों दिया ? हे धनी ! अब भी इसके लिए आपके मनमें क्षोभ (भय) उत्पन्न नहीं होता.

बारे मासना पख चोवीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन ।
त्रणसे ने साठ वचे रात थै, तमे हजिए न सुणो वचन ॥ ८

बारह महीनेके चौबीस पक्ष और उसके तीन सौ साठ दिन होते हैं. इन तीन सौ साठ दिनोंकी उतनी ही रातें हुईं, फिर भी अब तक आप मेरी पुकार क्यों नहीं सुन रहे हैं ?

एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडी मांहें साठ पाणीवल ।
एक पाणीवल मांहें साठ पल थाय ,
तमे एवडां रुसणां कीधां सबल ॥ ९

एक दिन और रातकी साठ घड़ियाँ होतीं हैं. एक घड़ीमें साठ बार पानीमें बुलबुले उठते हैं. एक बुलबुला उठनेमें साठ पल बीतते हैं. इतने लम्बे समय तक आप मुझसे क्यों रूठे रहे ?

वली ने वसेके अपर महीनो, अधको ते आव्यो जेठ ।
हवे कसने पूरो कसोटिए, तमे पारखुं लेओ छो मारुं नेठ ॥ १०

दूसरी विशेषता यह है कि बारह महीनेके बाद दूसरा अधिक मास ज्येष्ठ महीना आया. इतना लम्बा समय बीतनेके बाद मुझे लगता है कि आप कसौटी पर कस कर निश्चित रूपसे मेरी परीक्षा ले रहे हैं.

हुं अंग राखुं वालाजीसुं मलवा, नहीं तो ततखिण दऊं निवेड ।
वली मेलो न आवे नौतनपुरीए, ते माटे करुं छुं जेड ॥ ११

मैंने प्रियतम धनीसे मिलनेकी आशामें अपना शरीर टिका रखा है. अन्यथा क्षणभरमें ही मैं इसका त्याग कर सकती हूँ, फिर नवतनपुरीमें मिलनका ऐसा समय नहीं आएगा, इसलिए मैं जिद कर रही हूँ.

वल्लभ तणो व्रह न खमाय, वली न वसेके हवणां ।
प्रमोधपुरी मांहें प्रमोध दीधो, हवे मनोरथ छे अति घणा ॥ १२

प्रियतम धनीका वियोग विशेष रूपसे इस विकट समयमें तो सहा नहीं जाता. प्रबोधपुरी (कारागृह) में आपने उपदेश दिया, किन्तु अब भी मेरे कई मनोरथ शेष हैं.

ते माटे हुं व्रह सहुं छुं, जीव राखुं समझावी मन ।
नौतनपुरी तमसुं मेलो करी, मारे सांभलवा छे श्रीमुखवचन ॥ १३

इसलिए मैं विरहका दुःख सह रही हूँ. अभी भी मनको समझा कर जीव (प्राण) को टिका रखा है. मुझे नवतनपुरी धाममें आपके साथ मिल कर आपके श्रीमुखसे वचन (तारतम ज्ञान) सुनने हैं.

जेणी रुत मुने कीधी परदेसण, वली ते आव्यो आसाढ ।
हजी विछोडो न भाजो रे वाला, जीवने थई वली वाढ ॥ १४

जिस ऋतुमें आपने मुझे विदेश (माया) में भेजा था वह आषाढ महीना पुनः आ गया है. हे धामधनी ! अब तक वियोगका आघात ही नहीं मिटा है. इसके ऊपर पुनः इसे विरहकी दूसरी चोट लग गई.

वाढ वसेके थै जोरावर, ते उपर दीधुं वली लोण ।
अवगुण मारा तमे आण्यां चितसुं, हवे खबर ते लेसे मारी कोण ॥ १५

यह घाव बड़ा ही दुःखदायी है. फिर उस पर नमक छिड़का गया है (सद्गुरुके धामगमनका घाव बड़ा ही प्रबल है तदुपरान्त उनके नाम पर मेला करनेकी तैयारी करते समय नजरबन्द होना घाव पर नमक छिड़कनेकी बात है). हे प्रियतम धनी ! यदि आप मेरे अवगुणोंको चित्तमें धारण किए रहेंगे तो मेरी सम्हाल कौन लेगा ?

मुं विलखतां तमे दया न कीधी, हवे स्यो वांक काढुं तमारो ।
दिन घणां हुं रहीस तम सारुं, हवे जो जो तमे जोर अमारो ॥ १६

इन्द्रावती व्याकुलता पूर्वक कहती है, मैं तड़फती रही और आपने मुझ पर दया नहीं की. अब आपका क्या दोष निकालूँ. आपकी राह देखते हुए अब भी मैं कई दिनों तक यहाँ जीती रहूँगी. अब आप मेरी शक्तिको अवश्य देखें.

आ पोहोरो छे कठण एवो, तमे थै बेठा अलगां अवल ।
कलकल्यानुं इहां काम नहीं, जीतिए पोताने बल ॥ १७

यह समय बड़ा कठिन है. आप तो पहलेसे ही अलग होकर बैठे हुए हैं. अब यहाँ तड़पनेसे कोई काम नहीं निकलेगा. अब तो आत्म-बलके द्वारा ही जीतना होगा.

केड बांधीने ज्यारे कीजे उपाय, त्यारे तमे थाओ नरम ।
आपोपुं ज्यारे नाखिए आंख मीची, त्यारे तमने आवे सरम ॥ १८

कमर कस कर जब प्रयत्न किया जाएगा तभी आप द्रवित होंगे. जब मैं आँख बन्द कर अपने आपको समर्पित कर दूँगी तब आपको लज्जाका अनुभव होगा.

इन्द्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो ,
जो तमे राखो पोतानी लाज ।
ततखिण आवीने तेडी जाओ,
जेम काढुं मारा रुदयानी दाझ ॥ १९

इन्द्रावती पुनः कहती है, यदि आप अपनी लाज रखना चाहते है तो मेरी अभिलाषाओंको पूर्ण कीजिए. आप तत्क्षण आकर मुझे बुला ले जाएँ ताकि मैं हृदयकी चाहना मिटा सकूँ.

षटरुतीनो कलस-राग प्रभाती

वचन वालाजीनां वालेरां रे लागे ,
मुने मीठरडां रे लागे, संभलावो चरचा मीठडी वाण रे ।
वचन जे तारतम तणां रे, हवे नहीं मूकुं निरवाण रे ॥ १

मुझे प्रियतम धनीके वचन अति मीठे लगते हैं. हे धनी ! अब मधुर वचनों द्वारा चर्चा सुनाइए. दिव्य तारतमके वचनोंको अब मैं निश्चित रूपसे नहीं छोडूँगी.

सुणियां जे सुन्दर तणां रे, न मूकिए एह वचन रे ।
आटला दिवस में विचार न कीधो, नव लीधुं वचननुं धन रे ॥ २

जिसने धनीजीके सुन्दर वचन (तारतम ज्ञान) सुन लिए हैं वह उनको नहीं छोड़ेगा. इतने दिनों तक मैंने विचार (मनन) नहीं किया और आपके वचनरूपी धनको भी ग्रहण नहीं किया.

घणां दिवस में ना जाण्युं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे ।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मुने दिध रे ॥ ३

हे मेरे प्रियतम धनी ! मैंने कई दिनों तक आपके वचनरूपी निधिको नहीं पहचाना. मेरे जीवके अन्तःचक्षु खोल कर, दयाकरके आपने मुझे अखण्ड ज्ञान दिया है.

चरचा जे श्रीमुख तणी, सुन्दर वाण वचन रे ।
एना विचार मोसुं करो रे वाला, मोकलो मेलीने मन रे ॥ ४

आपके श्रीमुखसे निकली हुई वाणीकी चर्चा अति सुन्दर (सुमधुर) है. हे प्रियतम ! अब अपने उदार मनसे मेरे साथ उन वचनों पर विचार विमर्श कीजिए.

पेरे पेरेनी प्रीछवनी करी रे, विध विधनां कहो द्रष्टांत ।
व्रज रास ने घर तणी, मुने कहो वीतक वरतांत ॥ ५

मुझे विभिन्न प्रकारके प्रश्नोंके साथ विभिन्न दृष्टान्त देकर अखण्ड व्रज, रास तथा परमधामका पूरा वृत्तान्त सुनाइए.

आडीका जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह ।
तेह तणो विचार करी रे, मुने जुगते प्रीछवो वली एह ॥ ६

हे प्रियतम धनी ! सुन्दरसाथको एकत्रित करनेके लिए आपने जो चमत्कार पूर्ण (आड़ीका) लीलाएँ की, उनको भी विचार कर मुझे युक्तिपूर्वक समझाइए.

तारतम तणो विचार करो रे, पहेलो फेरो थयो केही पेर ।
केही पेरे मनोरथ कीधां, जाग्या केही पेरे घेर ॥ ७

तारतम ज्ञानके वचनों पर ठीकसे विचार करके कहिए कि पहली बार व्रज

तथा रासकी लीला कैसे और क्यों हुई ? इन लीलाओंके द्वारा कैसे हमारे मनोरथ पूर्ण किए तथा क्षणमात्रके लिए हम दिव्य परमधाममें किस प्रकार जागृत हुई ?

आणे फेरे अमे केम करी आव्या, अने तमे आव्या छो केम ।
तमे कोण ने तम मांहें कोण, मुने कहीने प्रीछवो वली एम ॥ ८

इस बार तीसरे (जागनीके) ब्रह्माण्डमें हम किस प्रकार आए और हे धनी ! आप क्यों आए हैं ? आप कौन हैं ? तथा आपके भीतर (हृदयमें) कौन-सा स्वरूप विराजमान है ? मुझे ये सब बातें फिरसे कह कर समझाइए.

पोते प्रगट पधार्‌या छो, आडा देओ छो व्रज ने रास ।
इन्द्रावतीसुं अंतर कां कीधुं, तमे देओ मुने तेनो जवाब ॥ ९

हे सद्‌गुरु धनी ! आप स्वयं प्रकट रूपमें इस जागनीके ब्रह्माण्डमें आए हैं. फिरसे व्रज और रासकी चमत्कारपूर्ण (आडिका) लीलाओंकी ओर संकेत करते हैं. अब आप मुझे उत्तर दें कि आप इन्द्रावतीसे इतना अन्तर (भेद) क्यों रख रहे हैं ?

आपोपुं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ ।
दरपणनुं सुं काम पडे, ज्यारे पहेर्‌युं ते कंकण हाथ ॥ १०

हे मेरे प्रियतम धनी ! स्वस्वरूपका साक्षात् परिचय करा कर आप व्रज रासकी आडिका लीला रूपी दर्पण दिखा रहे हैं. जब मैंने आपका कंकण (तारतम ज्ञानरूपी चूड़ी) हाथोंमें पहन लिया है तो अब (इन व्रज, रासकी आडिका लीलारूपी) दर्पणका क्या काम है ? (तात्पर्य है कि "गुरुः साक्षात् परब्रह्म" के अनुसार सद्‌गुरु ही साक्षात् स्वरूप हैं)

मुने अमल मायानो जोर हुतो, तमे ते माटे कीधो अंतर ।
हवे तमे पडदा टाल्या रे वाला, आप छपसो केही पर ॥ ११

मुझ पर मायाका प्रबल मद चढ़ा हुआ था, इसलिए आपने मुझसे अन्तर किया है. हे प्रियतम धनी ! अब जब आपने अज्ञानताका आवरण हटा लिया है तो आप कैसे छिप सकेंगे ?

आपोपुं ओलखावी करी रे, मुने दीधो वदेस ।
अवगुण जे में कीधा मारा वाला, तेनी तमे हजी न मूको रीस ॥ १२

आपने अपनी पहचान करा कर मुझे परदेश भेज दिया है. हे धनी ! मैंने जो अवगुण (साक्षात् स्वरूपमें न पहचानने जैसे) किए थे उसका रंज अभी तक आप अपने हृदयसे निकाल नहीं पा रहे हैं.

मुने माया लहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधा अवगुणो ।
अंध थको ज्यारे पडे रे कुवामां, त्यारे केहो वांक तेहतणो ॥ १३

मुझ पर मायावी लहरोंका बड़ा प्रबल प्रवाह था. इसलिए मुझसे अवगुण हो गए. अन्धा व्यक्ति यदि कूवेंमें गिर जाता है तो उसमें उसका क्या दोष ?

तमे कहेसो ज्यारे तारतम सांभल्युं, त्यारे अंध कहेवाय केम ।
तेह तणो पड उतर दऊं, तमे सांभलो द्रढ करी मन ॥ १४

आप कहेंगे कि जब मैंने तारतम ज्ञान सुन लिया तो मैं अन्धी कैसे कहलाऊँगी ? मैं उसका भी उत्तर दे रही हूँ, उसे दृढ़ मनसे सुनिए.

वचन सुण्यां ते ग्रह्यां मन मांहें, जीवने मोहजल पूरी लहेर ।
तो दुख तमने देवंतां, जीवने न आव्यो बेहेर ॥ १५

आपके तारतम ज्ञानके वचन सुन कर मैंने उन्हें मनमें ग्रहण किया किन्तु जीव पर मोह जलका बुरा प्रभाव था. इसलिए आपको दुःखी करनेमें मनको जरा भी दर्द नहीं हुआ.

वली कहेसो जे निरदोष थाय छे ,
पण नथी थाती निरदोष कांई हुं ।
धणी सामी बेसी आ मोहजलमां, लेखुं केणी विधे करुं ॥ १६

आप कहेंगे कि इन्द्रावती ! तू निर्दोष है, किन्तु मैं तनिक भी दोष रहित नहीं हूँ. हे धनी ! आपके समक्ष बैठकर इस मोह जलमें मैं अपने अवगुणोंका निरूपण किस प्रकार कर पाऊँगी ?

हवे ने कहुं ते सांभलो मारा वाला, हुं विनता वालाजी तमारी ।
अवगुण जो अनेक होय मारा, तोहे तमे लेओ ने सुधारी ॥ १७

हे प्रियतम धनी ! मैं जो कुछ कह रही हूँ, उसे सुनिए, मैं आपकी अङ्गना

हूँ. मुझमें यदि अनेक अवगुण हों भी उन सबको आप सुधार लें.

जे में तमसुं कीधा रे अवगुण, तेनी तमे वालो छो रीस ।
आपोपुं ओलखावी करी, तमे दीधो मुने वदेस ॥ १८

आपके साथ मैंने जो अनुचित व्यवहार (आपके वचनोंका अनादर) किया, उसका क्रोध आप मुझ पर उतार रहे हैं. इसलिए आपने अपनी पहचान करा कर मुझे विदेश (नजरकैदमें) भेज दिया.

एक पुरीमां आपण बेठां, मुने कीधी परदेस ।
व्रह तणी जे वातो मारा वाला, हुं तमने आवी कहेस ॥ १९

एक ही नगरी (नवतनपुरी) में हम दोनों बैठे हैं, किन्तु आपने मुझे वियोग देकर परदेश भेज दिया. हे प्रियतम ! विरह वेदनाकी सभी बातें मैं वहाँ आकर आपसे कहूँगी.

जे व्रह तमे दीधो रे वाला, ते सिर उपर में सह्यो ।
अवगुण साटे तमे ए दुख दीधां, हवे पाड केहनो नव रह्यो ॥ २०

हे धनीजी ! जो वियोग (नौ वर्षके विरहका दुःख) आपने मुझे दिया उसको मैंने शिरोधार्य कर सहन किया. मेरी भूलोंके बदलेमें आपने मुझे दुःख दिया है. अब किसीका उपकार (ऋण) किसीके ऊपर नहीं रहा है.

हवे हुं आवीस तम पासे, तुं जाईस नाठ्यो क्यांहे ।
तें छेतरी घणां दिन मुने आगे, ते वार बूठी त्यांहे ॥ २१

अब मैं (प्रेम, भक्तिको लेकर) आपके पास आऊँगी आप भाग कर कहाँ जाएँगे ? कई दिनों तक आप मुझे बहलाते रहे. वह समय तो अब बीत गया.

अंग उमंग न माय रे वाला, हवे तोसुं करुं केही पर ।
पहेलुं अंग भीडीने दाझ भाजुं, पछे तेडी जाऊं मारे मंदर ॥ २२

हे धनी ! मेरे शरीरमें उमंग समा नहीं रहा है. अब आपसे मिलनेके लिए क्या उपाय करूँ ? सबसे पहले तो आलिंगन कर मैं अपनी विरहाग्निको शान्त करूँगी फिर अपने मन-मन्दिरमें आपको बैठाऊँगी.

जिहां लगे पाड हुतो मारे माथे, तिहां लगे हुती ओसियाली ।
हवे मारी पेर जो जो रे वाला, हुं न टलुं तुंथी टाली ॥ २३

जब तक मुझ पर आपका उपकार था, तब तक मैं आपके आधीन थी. हे प्रियतम धनी ! अब आप मेरी शक्ति देखें. आपके दूर करने पर भी मैं दूर नहीं जाऊँगी.

हवे हुं जीतुं तुंने जोपे करी, में ओलखियो आधार ।
में अनेक वार जीत्यो रे आगे, वली ने वसेके रे आ वार ॥ २४

अब मैं आप पर विजय प्राप्त करूँगी, क्योंकि मैंने प्राणाधार धनीको पहचान लिया है. मैंने इससे पूर्व व्रज, रासमें भी आपको कई बार जीता है, किन्तु इस बार विशेष रूपसे जीतूँगी.

केही पेरे वाद करीस तुं मोसुं, तुं छे मारो जाण्यो ।
जिहां जेणी पेरे कहीस रे वाला, तिहां आवीस मारो ताण्यो ॥ २५

आप मुझसे किस प्रकार विवाद करना चाहते हैं, मैं आपको अच्छी तरह जानती हूँ. हे प्रियतम धनी ! जहाँ, जिस प्रकार कहूँगी, वहाँ प्रेमरूपी डोरसे बँधकर आप पीछे पीछे खिंचे चले आएँगे.

जो एक पग भर राखुं तुंने, तो हुं इन्द्रावती नार ।
दिन घणां तुं छपयो मोसुं, हवे नहीं छपी सके निरधार ॥ २६

यदि मैं आपको एक पाँव पर खड़े रख पाऊँगी तो मेरा नाम इन्द्रावती सार्थक होगा. कई दिनों तक आप मुझसे छिपे रहे किन्तु अब निश्चित रूपसे आप छिप नहीं सकेंगे.

हवे जेम नचवुं तेम नाचो रे वाला, आव्या इन्द्रावतीने हाथ ।
ते वसीकरणनी दोरीए बांधुं, जेम देखे सघलो साथ ॥ २७

हे प्रियतम धनी ! अब तो मैं आपको जैसा नचाऊँगी, उसी प्रकार नाचना पड़ेगा. अब तो आप इन्द्रावतीके वशमें आ गए हैं. मैं आपको प्रेम (सेवा) रूपी वशीकरणके धागेसे इस प्रकार बाँध लूँगी कि समस्त सुन्दरसाथ उसे देखेगा.

जोइए कोण मुकावे जोरावर, ते कोय देखाडो नार ।
मारे मंदिर थकी कोण मुकावसे, वस मारे आव्या आधार ॥ २८

देखती हूँ ऐसी कौन बलवती सखी है जो मेरे धनीजीको मुझसे छुड़ा सकेगी. यदि ऐसी कोई हो तो दिखाएँ. मेरे मन मन्दिरमें विराजमान और मेरे वशीभूत प्राणाधारको मुझसे कौन छुड़ा सकता है.

जे कोई सुन्दरी होय रे जोरावर, तेणे सीखवुं वसीकरण वात ।
विध विधनी तेणे विद्या देखाडुं, जेणे वस थाय प्राणनो नाथ ॥ २९

यदि ऐसी शक्तिशालिनी कोई सखी हो, तो मैं उसे वशीकरण मन्त्र सिखा दूँ. उसे अलग- अलग प्रकारकी विद्याएँ (कलाएँ) बता दूँ, जिसके द्वारा प्राणोंके नाथ प्रियतम वशमें हो जाएँ.

देतां विद्या कोई जोर न दाखे, तो सखी बल करी मुकावसे केम ।
इन्द्रावतीने वस आव्या छो, हवे जेम जाणसे करसे तेम ॥ ३०

ऐसी विद्या देते समय यदि कोई (प्रेमरूपी) बलका प्रदर्शन न करे, तो वह सखी किस प्रकार बल पूर्वक धनीजीसे मुझको छुड़ा पाएगी ? हे प्रियतम धनी ! अब तो आप इन्द्रावतीके वशमें आ गए हैं. अब वह जैसा चाहेगी वैसा ही करेगी.

सेवा कंठमाला घालुं तेह सनंधनी, पोपट करुं नीलडे पांख ।
प्रेम तणां पांजरा मांहें घाली, हुं थाऊं साख ने द्राख ॥ ३१

आप द्वारा बताई हुई प्रेम और सेवाके अनुरूप प्रेमसेवारूपी माला (कण्ठमाला) आपको पहनाऊँगी और आपको हरे पँख वाले तोतेके समान (लीलाशुक) बनाऊँगी. फिर प्रेमके पिंजरेमें डाल कर मैं स्वयं पेड़ पर पका (अधपका) आम और द्राक्षके समान बन कर आप पर समर्पित हो जाऊँगी.

हवे हुं कहीस तेम तुं करीस, मुने व्रह दीधो अति जोर ।
तोहे तें मारी खबर न लीधी, में कीधां घणां बकोर ॥ ३२

अब मैं जैसा कहूँगी वैसा ही आपको करना पड़ेगा. क्योंकि आपने मुझे अत्यन्त कठिन विरह वियोग दिया है. मैंने रो-रोकर पुकार की थी फिर भी आपने मेरी सुधि नहीं ली.

खार हवे ते हुं वालुं रे वाला, घणां दिन हुती रुदे झाल ।
ज्यारे में तमने भीड्यां जीवसुं, त्यारे रुदे ठर्युं ततकाल ॥ ३३

हे प्रियतम धनी ! अब रंज तथा विरह वेदनाकी ज्वालाको मैं दूर कर रही हूँ जो मेरे हृदयको कई दिनोंसे जला रही थी. जिस समय मेरे जीवका आपके साथ मिलन हुआ, उसी समय मेरा हृदय शीतल और शान्त हो गया.

जीव सकोमल कूंपल काढे, खिण नव लागी वार ।
फूले रंग फल फलिया रे ततखिण, रंग रंग्यो विनता आधार ॥ ३४

प्रियतम धनीके साथ मिलन होते ही जीवमें शीतलता (नम्रता) के अङ्कुर फूट निकले. इसमें क्षण मात्रका भी विलम्ब नहीं हुआ. इसके बाद क्षण भरमें ही वे अङ्कुर फूल तथा फलमें परिणत हो गए और मैं प्रियतम धनीके प्रेमरङ्गमें रङ्ग गई.

इन्द्रावतीने एकांते हाथ आव्या, हवे जो जो अमारुं बल ।
ते वसीकरण करुं रे तमने, जेणे अलगां न थाओ नेहेचल ॥ ३५

हे धनीजी ! आप इन्द्रावतीके हृदयरूपी एकान्त स्थान पर आकर बैठ गए हैं. अब मेरी शक्तिको देखिए. मैं आपको इस प्रकार अपने वशमें रखूँगी कि आप कभी भी मुझसे अलग नहीं हो सकेंगे.

हवे अधखिण हुं अलगां न करुं ,
आतमाए लीधी आतमसुं बाथ ।
जीत्यो में तुंने जोर करी,
देखतां सरव साथ ॥ ३६

अब मैं धनीजीको आधे क्षणके लिए भी अलग होने नहीं दूँगी. मेरी आत्मा आपकी आत्माके साथ मिल कर एकाकार हो गई है. मैंने आत्म-बल द्वारा आपको समस्त सुन्दरसाथजीके सामने ही जीत लिया है.

तेजसुं तेज करुं रे मेलवो, जोतने जोत छे भेला ।
अंग सदीवे छे रे एकठां, पर आतमने मेला ॥ ३७

धनीजीके प्रकाशके साथ मैं अपना प्रकाश मिला दूँ. आपकी ज्योतिके साथ मेरी ज्योति मिली हुई है. परमधाममें हमारा अंग पर आत्माके रूपमें सदैव

एक साथ ही है.

अनेक वासनाओ तमे ओलखिओ ,
पण में ओलख्यो धाम धणी ।
तें मोसुं टाला घणुंए कीधां, पण में जीत्यो विध घणी ॥ ३८

हे सद्गुरु धनी ! आपने तो अनेक ब्रह्मात्माओंको पहचाना, परन्तु मैंने तो मात्र आपको ही पहचाना है. आपने मुझे टालनेके अनेक प्रयत्न किए, किन्तु मैंने आपको युक्ति पूर्वक जीत लिया.

वासना सकलने तमे परखो छो, जोई सरवेनां चेहेन रे ।
अंग ओलखी श्री धाम मधे, त्यारे देखो आहीं ऊभी एन रे ॥ ३९

समस्त ब्रह्मात्माओंको उनका आचरण (चरित्र) देख कर आप पहचान लेते हैं तथा परमधाममें उनकी पर आत्माको पहचान कर आप यथार्थ रूपसे उन्हें यहीं देखते हैं.

में तुंने परख्यो पूरे चेहेने, अंग ओलख्युं हुं अरधांग ।
में तुंने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धणी हुं अभंग ॥ ४०

मैंने सभी लक्षणों (आचरण) द्वारा आपके स्वरूपको पहचान लिया है, आखिर मैं आपकी ही अर्धांगिनी हूँ. मैंने आपको सभी प्रकार जीत लिया है. मैं आपकी अखण्ड सुहागिनी हूँ.

साथ सकलनां वचन विचारी, चित ओलखो छो सर्वे जाण ।
वचन पाधरां प्रगट कहे छे, जे पगलां भरियां प्रमाण ॥ ४१

आप समस्त सुन्दरसाथके वचनों पर विचार कर तथा उनके चित्तकी सभी जानकारी ले कर उन्हें पहचानते हैं. किन्तु आपके वचन तो सीधे और स्पष्टरूपसे कहते हैं कि जो कदम व्रजसे रास मण्डलमें जाते समय उठाए गए थे वही इसका सच्चा प्रमाण है.

श्रीजीनां वचन में विचारियां, निध लीधी वचनोनी सार ।
विविध पेरे में तुंने रे वाला, हुं जीती धाम धणी आधार ॥ ४२

सद्गुरुके वचनों पर मैंने विचार (मनन) किया तथा वचनरूपी धनका सार

ग्रहण किया. हे प्राणाधार प्रियतम धनी ! विभिन्न रीतिसे मैंने आपको जीत लिया है.

चौद भवन जे सुकजीए मथियां ,
वली पडदे मथियां ब्रह्मांड तीत ।
तेहनो सार तमे प्रगट करी रे,
साथने दीधो रूडी रीत ॥ ४३

चौदह लोकोंके ज्ञानका स्पष्ट मन्थन शुकदेव मुनिने किया. फिर इस ब्रह्माण्डसे परे अखण्ड व्रज-रासका भी उन्होंने परोक्ष मन्थन किया. उन सबका सार तत्त्व प्रकट कर आपने सुन्दरसाथको अच्छी तरह समझा दिया.

तेमां सार हुं तमतणो मथियां, तेहनो सार लीधो आधार ।
हुं धणियाणी श्रीधामधणीनी, में जीत्यो अनेक वार ॥ ४४

उन सबका मन्थन करनेके बाद मैंने जाना कि सर्व सारके सार स्वयं आप हैं. आप मेरे प्राणाधार हैं, मैं श्रीधामधनीकी अर्धांगना हूँ. इस प्रकार धनीजीको मैंने कई बार जीता है.

हवे चरणे लागी अंग भीडी इन्द्रावती ,
मुने मारे धणिए कीधी सनाथ ।
मनना मनोरथ पूरण करी,
वाले लीधी पोताने पास ॥ ४५

अब इन्द्रावती प्रियतम धनीके श्रीचरणोंमें प्रणाम कर उन्हें गले लगाती है और कहती है कि मेरे धनीजीने मुझे सनाथ बना दिया. मनके मनोरथ पूर्ण कर प्रियतमने मुझे अपने पास ले लिया है.

साथ हुतो जे इन्द्रावती पासे, वाले पूरी तेनी आस ।
सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलीयां ते रास प्रकास रे ॥ ४६

जो सुन्दरसाथ उस समय इन्द्रावतीके साथ थे प्रियतम धनीने उनकी भी

इच्छाएँ पूरी कीं. इस प्रकार सब मनोरथ पूरे हुए एवं फल स्वरूप रास तथा प्रकाशका आविर्भाव हुआ.

प्रकरण ८ चौपाई १७७

इति श्री षटरुती

बारमासी-राग मलार

[नजरकैदमें रहते हुए श्री प्राणनाथजीने छः ऋतुओंमें सद्गुरुके वियोगजन्य विरह विलाप किया, उस समय उन्हें श्रीकृष्ण वियोगसे सन्तप्त गोपियोंका स्मरण हो आया. इसलिए वे यहाँ उनके विरहका वर्णन करते हैं. जब श्रीकृष्णको अक्रूर गोकुलसे मथुरा ले गए तो गोपियाँ विरहतप्त होकर इस प्रकार कहतीं हैं-]

पीउजी तमे सरदनी रुतेरे सिधाव्यां ,
हांरे मारा अंगडांमां व्रह वन वाव्यां ।
ए वन खिण खिण कूंपलियो मूके ,
हारे मारुं तेम तेम तनडुं सुके ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥१

हे श्रीकृष्ण ! आप शरद ऋतुमें हमें छोड़ कर चले गए. हमारी हृदयभूमिमें आपने विरहके बीज बो दिए. इस विरह वनमें क्षण-प्रतिक्षण अङ्कुर निकलते हैं (विरह वेदना बढ़ती जाती है). जैसे-जैसे विरहकी ज्वाला अधिक प्रज्वलित होती जाती है, हमारा शरीर सूखता जाता है. हे श्रीकृष्ण ! मैं पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला हुं तो पीउ पीउ करी रे पुकारुं ,
पीउजी विना दोहेला घणां रे गुजारुं ।
हुं तो दुखडां मांहें ना मांहें ज मारुं ,
हुं तो निस्वासा अंगमां उतारुं ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं॥२

गोपियाँ कहतीं हैं, हे प्रियतम ! हम पिउ पिउकी रटन कर आपको पुकार रहीं हैं. आपके बिना हमारे दिन दूभर हो गए हैं. मैं इस दुःखको अन्दर ही अन्दर सह रही हूँ और निश्वासको भी अन्दर ही उतार रही हूँ. हे कृष्ण ! पिउ पिउकी पुकार कर हम आपका आह्वान कर रहीं हैं.

वाला मारा भादरवे ते नदी नालां भरियां ,
पीउजी निरमल जल रे उछलियां ।
वाला मारा गिर डुंगर खलखलियां ,
पीउजी तमे एणे समे हजिए न मलिया ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

हे प्रियतम ! भाद्र महीनेमें वर्षाके कारण नदी नाले भर गए हैं. सर्वत्र स्वच्छ जल उछल रहा है. गिरि कन्दराओंसे झरने निकल कर कलकल ध्वनि करते हुए बह रहे हैं. हे प्रियतम ! अभी तक आकर आप हमसे नहीं मिले. हे श्याम ! पिउ पिउकी रट लगा कर मैं आपको पुकार रही हूँ.

वाला तमे चालतां ते चार दिनडा कह्या ,
हांरे अमे एणी रे आसाए जोईने रह्या ।
वाला अमे वचन तमारा ग्रह्यां ,
हवे ते अवध ऊपर दिनडा गया ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे कृष्ण ! आपने मथुरा जाते समय चार दिनोंमें लौट आनेका वचन दिया था. हम इसी आशासे आपकी प्रतीक्षा कर रहीं हैं. हे प्रियतम ! आपके उन आश्वासन भरे वचनोंके आधार पर हम बैठी हुई हैं. किन्तु अब तो दी गई अवधिसे ऊपर कई दिन बीत गए हैं. हे श्याम ! पिउ पिउ कह कर मैं आपको पुकार रही हूँ.

वाला मारा दिनडा आसोना आव्या ,
हांरे घेर मेघलियो बारे रे सिधाव्या ।
वन वेलडिए रंग सोहाव्या ,
पीउजी तमे एणे समे व्रजडी कां न आव्या ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम धनी ! अब तो आश्विन मास भी आ पहुँचा, इस महीनेमें बारहों मेघ अपने-अपने स्थान पर चले गए. वनस्पति एवं लताओं पर सुहावने रङ्ग प्रकट हुए हैं. इस समय हे कृष्ण ! आप व्रजमें क्यों नहीं आए. हे श्याम ! मैं पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा एक वार जुओ वनडूं आवी ,
हां रे चांदलिए जोत चढावी ।
वेलडिए वनसपति रे सोहावी ,
एणे समे व्रहणियुं कां विलखावी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे श्याम सुन्दर ! एक बार आकर वनकी शोभा तो देखिए. चन्द्रमाने चारों ओर अपनी किरणें फैलाई हैं. तलाएँ और वनस्पति भी शोभा दे रहीं हैं. ऐसे समय विरहिणीको क्यों तड़पा रहे हैं. हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

हेम रुत

वाला मारा हेमालेथी हेम रुत हाली ,
ए तो वेरण आवी रे व्रहणियुं उपर चाली ।
व्रजडी वीटी रे लीधी वचे घाली ,
पीउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

हे श्याम सुन्दर ! हिमालय पर्वतसे ठण्डी हवा लेकर हेमन्त ऋतु आ पहुँची. यह ऋतु हम विरहिणियोंके लिए शत्रु बन कर आ गई है. उसने समग्र व्रज भूमिको चारों ओरसे घेर लिया है. हे पिउजी ! अब भी आप हठ पकड़ कर (निष्ठुर बनकर) क्यों बैठे हैं ? हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

रे व्रही तमे व्रहणियुंने कां न संभारो ,
नंद कुंवर नेहडो छे जो तमारो ।
वाला मारा दोष घणो रे अमारो ,
पीउजी तमे एणी विधे अमने कां मारो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

हे विरही श्रीकृष्ण ! यदि हमारे प्रति आपका स्नेह हो तो आप हम विरहिणियोंका स्मरण क्यों नहीं करते ? हे प्रियतम ! हमारे दोष अधिक हैं फिर भी इस प्रकार दुःख देकर हमें क्यों मार रहे हैं ? हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा कारतकियो अंगडां कांपे ,
नाहोलिया तारो नेहडो बाले मुने तापे ।
वाला मुने गुण अंग इन्द्रियो रे संतापे ,
पीउजी विना दुखडां ते सहु मुने आपे ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

कार्तिक मासके शीतल वायुसे मेरे शरीरके प्रत्येक अंग काँप रहे हैं. हे प्राणपति ! आपका प्रेम-विरह हमें जला रहा है. हमारे गुण, अंग, इन्द्रियाँ हमें दुःखी (व्याकुल) बना रहे हैं. प्रियतम धनीके बिना ये सब हमारे लिए दुःखदायी हो रहे है. हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा टाढडी ते सहुने वाय ,
हांरे अम व्रहणियुंने अगिन न माय ।
उपर टाढो वावलियो धमण धमाय ,
ए रुत मुने सुतडा सूल जगाय ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे नाथ ! यह शीत ऋतु सबको प्रभावित करती है. हम विरहिणियोंसे विरह वेदनाका दुःख सहन नहीं होता. ऊपरसे शीतल वायु उसे धौंकनीकी भाँति अधिक प्रज्वलित करता है. यह ऋतु सुप्त दुःख दर्दको जगाती है. हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला महीनो मागसरियो मद मातो ,
ते तो अमने मारसे रे जो नी जातो ।
तारा व्रहणी रहेसे रे वेराटमां वातो ,
अम उपर एम कां नाखी निघातो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम ! अब मस्तीसे भरा हुआ मार्गशीर्ष महीना आ पहुँचा. देखो तो वह जाते-जाते हमें मार डालेगा. बादमें आपकी इन विरहिणियोंकी (वेदनाकी) कथा ही इस जगतमें शेष रह जाएगी. ऐसा असीम दुःख आप हम पर क्यों डाल रहे हैं ? हे कृष्ण ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

रे वाला मारा सियालो सुखणियुं मांगे ,
पीउजीनां सुखडांमां सारी रात जागे ।
वालाजीने विलसे रे बडभागे ,
अमने तो मंदरियुं मसाण थै लागे ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे प्राणपति ! शीत ऋतुमें सौभाग्यवती आत्माएँ प्रियतम धनीका सुख चाहतीं हैं और प्रियतमके सुखमें सारी रात जागती रहतीं हैं. वह सुहागिनी भाग्यवती है जो इस समय प्रियतमके साथ विलास कर रही है, परन्तु हमें तो हमारा घर प्रियतम धनीके बिना श्मशान जैसा लग रहा है. हे श्यामसुन्दर ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

सीत रुत

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी ,
वेलडियुं वन जाय रे सर्वे सूकी ।
वसेके वली बाले रे उतरियो फूंकी ,
पीउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

हे मेरे प्रियतम धनी ! यह अत्यन्त शुष्क शीत ऋतु आ पहुँची. इस ऋतुमें वनकी सब लताएँ सूख जातीं हैं. विशेष रूपसे उत्तर दिशाका वायु बह रहा है. ऐसे समय हे प्रियतम ! हमें छोड़ कर आप अभी तक कहाँ बैठे हैं ?

हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय ,
हांरे मारा अंगडामां अगिन न माय ।
वाला तारी झालडियुं केमे न झंपाय ,
पीउजी तारो एवडो स्यो कोप कहेवाय ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

हे प्रियतम ! मेरे श्वासोच्छ्वास धौंकनीकी भाँति चल रहे हैं. मेरे अंग अंगमें विरहाग्नि प्रज्वलित हो रही है. हे प्रियतम ! यह किस प्रकारका कोप (क्रोध) है ? जिसकी ज्वालाएँ किसी भी तरह शान्त नहीं होती. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगाकर पुकार रही हूँ.

वाला मारा पोस महीनो रे आव्यो ,
हांरे अम दुखणियुंने दुख पूरा लाव्यो ।
वेरीडो अम उपर आवीने झंपाव्यो ,
हांरे मारुं चीरी अंग मीठडे भराव्यो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

हे प्रियतम धनी ! अब पौष महीना आ पहुँचा. यह महीना हम दुःखियोंके लिए तो पूरा पूरा दुःख लेकर आया है. यह शीत ऋतु हम पर शत्रु बन कर टूट पड़ी है और पहलेसे ही आहत मेरे अंगों पर नमक छिड़कनेका काम कर रही हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला टाढी अगिननो वावलियो वाय ,
नीला टली सूकीने भाखरियो नथाय ।
पान फूल फल सर्वे झरी जाय ,
वाला अमे ए रुत केमे न खमाय ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे प्रियतम ! यह शीत ऋतुकी ठण्डी हवा पागल होकर आगकी तरह जलन पैदा कर रही है. इसके प्रभावसे हरी-भरी हरियाली सूख कर विवर्ण हो गई

है. पत्ते, फूल, फल आदि सब गिर गए हैं. हे प्रियतम ! यह ऋतु किसी भी प्रकार सहन नहीं होती. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा आव्यो रे महीनो माह ,
जंगलियुं बाले रे वनसपति दाह ।
दाहनां दाधां रुखडियो केवा चरमाय ,
स्याम विना सुंदरियुं एम सोहाय ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम ! अब माघ महीना आ पहुँचा है. इसकी ठंडक जङ्गलकी वनस्पतियोंको अग्निकी भाँति तपा देती है. इस दाहसे जल कर वृक्ष कैसे मुरझा गए हैं. इसी प्रकार श्यामसुन्दरके बिना गोपियाँ विरहके दुःखसे तड़प रहीं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

रे वाला मारे मंदरिए आवीने आरोग ,
हां रे अम व्रहणियुंना टालो रे विजोग ।
हांरे सुंदर सेजडीनो आवी लेओ भोग ,
ए तां सकल तमारो संजोग ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे प्रियतम ! आप मेरे घर आकर भोजन ग्रहण करें और हम विरहिणियोंका वियोग मिटा दें. हमारे हृदयकी सुख-शैय्याका उपभोग करें, क्योंकि यह सब आपसे मिलनके लिए ही सजाई गई है. (इस पर आपका ही अधिकार है.) हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वसंत रुत

वाला मारा आवे रे रुतडी वसंत ,
चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत ।
वाला वनडुं मोरयूं रे कूंपलियो करंत ,
एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

हे धनी ! सुन्दर वसन्त ऋतुका आगमन हो गया है. इसमें चन्द्रमाके मुखसे अमृत रस झर रहा है. हे प्रियतम ! समस्त वन कलियोंसे भर गया है. ऐसे समय यदि आप नहीं आए तो मेरे जीवनका अन्त हो जाएगा. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

एणे समे अबीर गुलाल उछालिया ,
चोवा चंदन केसर कचोले भरियां ।
नाहो नारी रमे रे फागणिए मलियां ,
एणे समे अमे तो घणुं कलकलियां ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

इस ऋतुमें सब अबीर गुलाल उछालते (उड़ाते) हैं. कटोरोंमें चन्दन, केशर आदि भर कर सब स्त्री-पुरुष मिल कर फागका उत्सव मनाते हैं. ऐसे समयमें मैं बिना धनीजीके व्याकुल होकर दुःखी हो रही हूँ. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला वन फागणियो रे उछाले ,
पंखीडां करे रे कलोल बेठां माले ।
हांरे अम व्रहणियुंना चितडां चाले ,
आंगणडे उभियुं पंथडो निहाले ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

हे प्रियतम ! फाल्गुन महीनेमें वन वृक्ष हवामें झूम रहे हैं. नीड़ों (घोसलों) में बैठे हुए पक्षी मधुर स्वरसे कलोल कर रहे हैं. ऐसे वातावरणमें हम वियोगिनियोंका चित्त चलायमान हो जाता है. आँगनमें खड़ी-खड़ी मैं आपकी राह देख रही हूँ. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला वनडुं कोल्युं कामनी पामी करार ,
पसु पंखी हरखे पाडे रे पुकार ।
वाला व्रह भाजो रे व्रहणियुंना आ वार ,
एणे समे न आवो केम प्राणना आधार ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे प्रियतम ! वनकी लताएँ विकसित हो रहीं हैं. इसी प्रकार पतिके सान्निध्यमें

रहनेवाली वनिताएँ हर्षविभोर होतीं हैं. पशु-पक्षी आनन्द पूर्वक बोल रहे हैं. हे प्रियतम ! ऐसे समयमें आकर हम विरहिणियोंके वियोगको दूर कीजिए. हे प्राणाधार ! ऐसे समय आप न जाने क्यों नहीं आ रहे हैं ? हे श्याम ! मैं पिउ पिउ कह कर आपको पुकार रही हूँ.

वाला मारा चैतरिए एणे मास ,
पीउजीसुं करतां विनोद घणुं हास ।
वन मांहें विविध पेरे रे विलास ,
ते अमे अहेनिस नाखुं छुं निस्वास ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम धनी ! इस चैत्र महीनेमें हम सब आपके साथ हास्य विनोद करती थीं. वनमें विभिन्न प्रकारसे आनन्द विलास करती थीं. उसका स्मरण कर अब रात-दिन विरहवेदना युक्त निश्वासें छोड़ रहीं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

वाला मुने ए दिन केम करी जाय ,
पीउजी विना खिण वरसा सो थाय ।
वाला मुने विलखतां रैणी विहाय ,
पीउजी विना ए दुख केने न कहेवाय ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे प्रियतम ! मेरे ये दिन किस प्रकार बीतेंगे ? आपके बिना एक क्षणका समय भी सौ वर्ष जैसा लग रहा है. हे नाथ ! हमारी रातें विलखते हुए बीततीं हैं. प्रियतमके बिना यह दुःख किसीको भी कहा नहीं जा सकता. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

ग्रीषम रुत

वाला मारा आवी रे रुतडी ग्रीषम ,
अम्रत रस लावी रे फल उतम ।
वन फल पाकीने थयां रे नरम ,
वाला तमे एणे समे न आवो केम ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

हे प्रियतम ! ग्रीष्म ऋतु आ पहुँची. वह अपने साथ फलोंमें श्रेष्ठ आमका रस लेकर आई है. वनके फल पक कर नरम हो गए हैं. हे प्रियतम ! आप ऐसे समय (कोमल हृदय होकर) व्रजमें क्यों नहीं आते ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा व्रट जमुना वृंदावन ,
हां रे टाढी छांहेडी तले रे कदम ।
पीउजी इहां देतां रे पावलिए पदम ,
ते अमे विलखुं छुं वालाने वदन ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

हे प्रियतम ! वृन्दावनमें यमुना तट पर कदम्ब वृक्षकी शीतल छाया फैली हुई है. आप इसी स्थान पर चरणकमल रखते थे. आपके उस स्वरूपका स्मरण कर हम विलख विलख कर रो रही हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

वैसाख फूल्यो रे वेलडिए बेहेकार ,
भमरा मदया करे रे गुंजार ।
पंखीडां अनेक कला रे अपार ,
वाला वन विलस्यां तणी आ वार ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

वैशाख महीनेमें लताओंमें पुष्प खिल कर सुगन्धि फैला रहे हैं. मदमस्त भवरें उनका रसपान करनेके लिए गुञ्जायमान हो रहे हैं. पक्षीगण अनेक कलाओंके साथ आनन्द कर रहे हैं. हे प्रियतम ! वनमें आनन्द-विलास करनेका यही समय है. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला रवि तपे रे अंबरियो निरमल ,
पीउजी कारण वास्यां जल रे सीतल ।
वदन देखाडो रे वालैया सकोमल ,
पीउजी अमे पंथडुं निहालुं पल पल ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे धनीजी ! स्वच्छ आकाशमें सूर्य तप रहा है. आपके लिए हमने

सायंकालका ठण्डा जल भर रखा है. हे प्रियतम ! आप अपने सुकोमल स्वरूपके दर्शन दीजिए. हम हर क्षण आपकी राह देख रहीं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला वनमां मेवो रे महीनो जेठ सार ,
एणे समे आवो रे नंदना कुमार ।
पीउजी तमे सदा रे सुखना दातार ,
व्रजवधू विलखती पाडी रे पुकार ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम ! वनमें श्रेष्ठफल (मेवा) पकनेका ज्येष्ठ महीना आ पहुँचा है. हे नन्द नन्दन ! इस समय आप पधारिए. आप शाश्वत (अखण्ड) सुख देने वाले हैं. अतः व्रजवधू (गोपियाँ) आपके नामकी रटन करती हुई पुकार रहीं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

सखियो तारा सुखडां संभारीने रुए ,
हवे अम विजोगणियुंने कोण आवे जुए ।
पीउजी विना आंसुडां ते कोण आवी लुए ,
वाला पछे आवसो सुं अम मुए ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

सब सखियाँ आपके सुखका स्मरण करती हुई रो रहीं हैं और कहतीं हैं कि अब यहाँ आकर हम वियोगिनियोंको कौन देखेगा ? प्रियतमके बिना कौन आकर हमारे आँसू पूछेगा ? हे प्रियतम ! क्या आप हमारे मर जानेके बाद आएँगे ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वर्षा रुत

पावसियो आव्यो रे वर्षा रुत मांहे ,
भोमलडी ढांकी रे वादलिए छांहे ।
अंबरियो गाजे रे वीजलडी वा वाए ,
पीउजी विना मारे रे अमने घाए ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

हे प्रियतम ! वर्षा ऋतुके अन्तर्गत आकाशमें मेघ छा रहे हैं. बादलोंने काली

घटाओंसे धरतीको ढँक लिया है. आकाश गर्जना कर रहा है और बिजली चमक रही है. ठण्डी हवा चल रही है. यह ऋतु पिउकी अनुपस्थितिमें हमें आहत कर रही है. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

एणे समे भेलां सहु घर वारी, अधखिण अलगां न थाय नर नारी ।
परदेस होय ते पण आवे रे संभारी ,
पीउजी एवी केही अप्रापत अमारी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

इस वर्षा ऋतुमे घर परिवारके सब लोग एकत्रित होकर रहते हैं. स्त्री–पुरुष आधे क्षणके लिए भी एक दूसरेसे अलग नहीं रह सकते. यदि कोई विदेशमें हो तो भी ऐसे समय घरकी याद कर लौट आता है. परन्तु हमारा क्या दोष है जिसके कारण आप अप्राप्य (दुर्लभ) हो गए हैं (लौट नहीं रहे हैं). हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

मेघलियो आवीने अषाढ धडूके ,
सेरडियो साम सामी रे ढलूके ।
मोरलिया कोइलडी रे टहूंके, एणे समे कंथ कामनियुंने केम मूके ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

आषाढ़ महीनेमें मेघकी गर्जना होती है और बादल परस्पर टकरा कर मुसलधार वर्षा करते हैं. मोर और कोयल मधुर ध्वनिसे वनको गुञ्जित कर देते हैं. ऐसे समय पति अपनी प्राणरूपा अङ्गनाको कैसे छोड़ सकते हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा भोमलडी रे नीलाणी ,
मेघलियो वली वली सींचे पाणी ।
वीजलडी चमके आभण माणी ,
पीउजी तमे एणे समे वेदना न जाणी ।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

हे प्रियतम ! समग्र धरती हरियालीसे आच्छादित हो गई है. बादल वारंवार

वर्षा कर धरतीको जलसे सींच रहे हैं. बादलोंके साथ रङ्ग रेलियाँ करती हुई बिजली चमक रही है, किन्तु इस समय भी आपने हमारी विरह वेदनाको नहीं समझा. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

रे वालाजी श्रावणयो सलसलियो ,
आंभलियो आवीने भोमे लडसडियो ।
चहुं दिस चमके गरजे गलियो ,
पीउडा तुं हाजिए कां अमने न मलियो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे प्रियतम ! श्रावण महीनेमें अधिक वर्षाके कारण जमीन नरम हो गई है. ऐसा लग रहा है मानों बादल धरती पर आकर मस्ती से लोटपोट हो रहे हों. चारों दिशाएँ बिजलीसे चमक रहीं हैं और बादल गरज रहे हैं. हे धनीजी ! अब तक आप हमें मिलने क्यों नहीं आए ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ की रट लगा कर पुकार रही हूँ.

पीउजी तमे पहेली कां प्रीतडी देखाडी ,
मांहेला मंदरियो कां दीधां रे उघाडी ।
पीउजी तमे अनेक रंगे रमाडी ,
हवे तो लई आसमाने भोमे पछाडी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे श्याम सुन्दर ! आपने पहले हमें प्रेम क्यों दिखाया ? हमारे हृदयरूपी मन्दिरके द्वार क्यों खोल दिए ? (अन्तर्दृष्टि खोल कर मुझे प्रेम पुजारिन बना दिया.) हे प्रियतम ! आपने हमें प्रेमानन्दकी अनेक रामतें खेलाईं और अब तो आकाशमें चढ़ा कर फिर जमीन पर फेंक (पछाड़) दिया. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

प्रकरण ९ चौपाई २१३

इति श्री बारमासी

वाला मारा षटरुतना बारे मास ,
हां रे तेना अहेनिस त्रणसे ने साठ ।
वाला तारी रोई रोई जोई में वाट ,
अम ऊपर एवडो कोप कीधो स्या माट ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १

गोपिकाएँ कह रहीं हैं, हे मेरे प्रियतमधनी ! छः ऋतुओंके बारह महीने होते हैं और उसके रात-दिन मिला कर तीन सौ साठ होते हैं. हे श्याम सुन्दर ! हमने इन दिनों रो-रोकर आपकी राह देखी है. आपने हम पर इतना कोप (रोष) क्यों किया ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस ,
जाणुं अमने मूकसे नहीं रे निरास ।
ते तो तमे मोकल्यो तमारो खवास ,
तेणे आवी वछोड्यां साणसिए मांस ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ २

हे मेरे प्रियतम धनी ! हमें आपसे मिलनेकी बड़ी आशा थी. हम मानती थीं कि आप हमें निराश नहीं करेंगे. आपने तो अपने स्थान पर अपने दूत (उद्धव) को भेजा. उन्होंने आकर सँड़सीसे हमारा मांस नोंच लिया (आपकी प्राप्तिके लिए अष्टांग योगादिकी शिक्षा दी). हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ. (उद्धवकी तरह नागजी विहारीजीका सन्देश लेकर हब्सामें आए थे.)

रे वाला भलुं थयुं रे भ्रांतडी भागी ,
हां रे तारे संदेसडे अमे जागी ।
हां रे रे एणे वचने रुदे आग लागी ,
हवे अमे जाण्युं चोकस अमने त्यागी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ३

गोपियाँ कहतीं हैं, हे कृष्ण ! अच्छा हुआ कि हमारी भ्रान्ति दूर हो गई. उद्धव

द्वारा भेजे गए आपके सन्देशके कारण हम सचेत हो गईं कि अब आप हमारे नहीं हैं. उद्धवके इन वचनोंने हमारे हृदयमें विरहाग्निको भड़का दिया और हमें विश्वास हो गया कि आपने निश्चित रूपसे हमारा त्याग किया है. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कह कर पुकार रही हूँ.

रे ऊधव तुं तो भली रे वधामणी लाव्यो ,
अमारे काजे सूलीने सांणसियो लई आव्यो ।
ऊधव तें तो अक्रूर पर इंडुं रे चढाव्यो ,
ऊधव तें दुखडां घणुं ज देखाड्यो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ४

व्रजवधुएँ उद्धवको व्यंगोक्तिमें कहतीं हैं, हे उद्धव ! तू हमारे लिए अच्छी बधाई लेकर आया है. हमारे लिए तू शूली और सँड़सी लेकर आया है. हे उद्धव ! तूने तो अक्रूर पर भी कलस चढ़ा दिया (तूने अक्रूरसे भी बढ़ कर हमारा दुःख बढ़ाया) और कई दुःख दिखाए. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

रे ऊधवडा तुं एटलुं जाण निरधार ,
ऊधव तुंने नथी रे बीहीक करतार ।
एणी मते पामीस नहीं तुं पार ,
तुं पण तारा धणीसुं विछडीस आ वार ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ५

हे उद्धव ! यह निश्चित रूपसे जान ले कि तुझे परमात्माका डर नहीं है. इस प्रकारके उलटे ज्ञानकी बातोंसे तू कभी भी भवसागर पार नहीं कर पाएगा. उलटा तू अपने स्वामीसे अलग होकर वियोगका दुःख भोगेगा. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

रे ऊधव राख तुं कने तारुं डहापण ,
पीउजी नहीं मूंकुं अमे एवी पापण ।
ताताने म दिए वली वली तापण ,
सखियो हवे समझ्यां संदेसडे आपण ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ६

हे उद्धव ! अपनी बुद्धिमत्ताको अपने पास रख. हम ऐसी पापिन नहीं हैं

कि हम अपने धनीजीको छोड़ दें. दग्ध (जले हुए) को तू अधिक मत जला. (हम जैसी विरहिणियोंको अधिक दुःखी न कर.) हे सखियो ! अब हम इस उद्धवका सन्देश समझ गईं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

रे ऊधव तारे डापणिए घणुं रे संतापी ,
रे मूरख तुंने ए मत कोणे आपी ।
अमे तुंने जाण्यो नहीं एवो पापी ,
तें तो नाख्यां अमारां अंगडां कापी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ७

हे उद्धव ! तेरे बुद्धि चातुर्यने हमें बहुत दुःख दिया. हे मूर्ख ! तुझे ऐसा ज्ञान किसने दिया. हम नहीं जानती थीं कि तू इतना पापी है. तूने तो (ब्रह्मको निराकार कहकर) हमारे शरीरके अंग काट डाले. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो हवे दुखडां के ऊपर कीजे ,
आपणो नंदकूँवर होय तो रीझे ।
आपणी वाते जदुनो राय न भीजे ,
सखियो हवे ऊधव ने संदेसा स्या दीजे ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ८

गोपियाँ परस्पर बातें करती हुई कहतीं हैं, हे सखि ! अब हम किसके लिए दुःखी हों. यदि हमारे नन्दनन्दन होते तो वे प्रसन्न होकर हमपर दया करते (इस प्रकारका सन्देश न भेजकर वे स्वयं व्रजमें लौट आते). हमारी इन बातोंसे यदुनन्दन प्रभावित नहीं होंगे. इसलिए अब उद्धवको क्या सन्देश भेजें. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो हवे आपोपुं सहु कोई झालो ,
कान्हजी होय तो दोडी जइए चालो ।
ए जदुराय नहीं रे गोपियोनो वालो ,
सखियो हवे ऊधवने गुझडी कां आलो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ९

हे सखियो ! अब सब अपने आपको सम्हालो, यदि हमारे श्याम सुन्दर-

कृष्ण कन्हैया होते तो हम उनके पास दौड़ कर पहुँच जातीं. ये यदुराय (यदुवंशी) हमारे प्रियतम नहीं हैं. अतः हे सखियो ! इस उद्धवको अपने प्रेम तथा विरह वेदनाकी गुप्त बातें क्यों कह रही हो ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

रे ऊधवडा अमारा धणी अम पासे ,
तारी मत लई जा रे तुं साथे ।
अधखिण अलगो न थाय अमथी नाथ ,
व्रह मांहें विलसुं वालैया संघात ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १०

सखियाँ उद्धवसे कहतीं हैं, हे उद्धव ! हमारे प्रियतम प्राणाधार श्यामसुन्दर तो हमारे पास ही हैं. तुम अपनी योगविद्याका ज्ञान अपने साथ लेकर वापस जाओ. हमारे प्राणाधार श्री कृष्ण हमसे आधे क्षणके लिए भी अलग नहीं होते. हम तो विरहमें मग्न (अभिन्न) होकर अपने प्रिय प्राणनाथके साथ विलास कर रहीं हैं. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

रे ऊधवडा व्रहमां नंदनो कुंवर ,
एणी अम कने खरी रे खबर ।
व्रहमां जोयुं लाधे ततपर, ते ऊधव अमे भूलुं केम अवसर ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ ११

हे उद्धव ! इस विरहमें भी नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हमारे पास ही हैं. क्योंकि उनके स्वरूपको हम अच्छी तरह पहचानतीं हैं. जब विरहाग्निमें प्रेमातुर होकर देखतीं हैं तो तुरन्त ही प्रियतम धनी मिल जाते हैं (हमें उस स्वरूपके दर्शन हो जाते हैं). हे उद्धव ! विरहके ऐसे सुन्दर अवसरको हम क्यों भूल जाएँ ? हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउकी रट लगा कर पुकार रही हूँ.

रे ऊधवडा अमारो धणी अममां गलियो ,
तम आवतां ते सांसो सरवे टलियो ।
ऊधव तारी वाते चित अमारो न चलियो ,
व्रह वधारी ऊधव पाछो वलियो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं॥ १२

हे उद्धव ! हमारे प्रियतम श्रीकृष्ण हममें ही ओतप्रोत हैं (हम सबके हृदयमें

आसीन हैं) तुम्हारे आनेसे हमारा संशय दूर हो गया. हे उद्धव ! तुम्हारी योगविद्याकी बातोंका हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और हमारा चित्त भी चलायमान नहीं हुआ. इन्द्रावती कहती है, इस प्रकार विरह बढ़ा कर उद्धव वापस लौट गए. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो हवे घरडा सहुए संभारो ,
रखे कोई वालाजीने दोस देवरावो ।
ए व्रह मांहेनो मांहें ज मारो, सखियो ए तो नहीं घर बार उघारो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १३

गोपियाँ परस्पर कहतीं हैं, हे सखियो ! अब सब अपने अपने हृदयरूपी घरको सम्हालो (नियन्त्रणमें रखो). अपने प्रियतम धनीको दोष मत दो. विरह वेदनाकी यह घूँट भीतर ही भीतर पिओ (सहन करो). क्योंकि धनीजीकी गुप्त बातें प्रकट करना उचित नहीं है. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो तमे मूको रे बीजी सहु वात ,
आपण ऊपर निसंक पडी रे निघात ।
दुखे केम मूकिए गोपीनो नाथ ,
हवे आपोपुं नाखो जेम रहे अख्यात ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १४

हे सखिगण ! अब दूसरी सब बातोंको छोड़ दो. हमारे ऊपर निश्चित रूपसे यह विरहरूपी आपत्ति आ पड़ी है. विरह दुःखमें हम हमारे धनी गोपीनाथका परित्याग कैसे कर दें ? अब अपनी इस देहको विरहाग्निमे जला दो ताकि हम जग विख्यात बन जाएँ. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो हवे विना घाए नाखो आप मारी ,
वालाजीना व्रहनी वात संभारी ।
वसेके वली राखो घर लोकाचारी ,
हवे एवी कठण कसोटी खमो नारी ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १५

हे सखियो ! अब चोट किए बिना (भीतर ही भीतर) अपने आपको (आत्माको श्रीकृष्णके चरणोंमें) समर्पित कर दो. प्रियतम श्याम सुन्दरके प्रेम विरहकी बातोंका स्मरण करते हुए संसारके लोकाचारकी मर्यादाका पालन करो. इस कठिन कसौटीको अब सहन कर लो. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो हवे व्रहनी भारी रे उपाडो ,
ए अंग मायानां माया मांहें पछाडो ।
ए व्रह बीजा केहने मा देखाडो ,
सखियो विना रखे कोणे बार उघाडो ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १६

हे सखियो ! विरह वेदनाके इस भारको वहन करो तथा मायावी शरीर मायाको ही सौंप दो. यह विरहकी पीड़ा अन्य किसीको मत कहो. अपनी सखियोंके बिना अन्य किसीके साथ इसे प्रकट मत करो. हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

सखियो मारो जीव जीवन मांहें भलियो ,
अमे माया ग्रही तोहे ते पल न टलियो ।
ए वालो अम विना कोणे न कलियो ,
इन्द्रावती कहे अमारो अमने मलियो ॥ ॥

हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारुं ॥ १७

इन्द्रावती प्रबोधपुरी (हब्सा) में बैठ कर कह रही है, हे सखियो ! मेरी आत्मा

प्रियतम धनीकी आत्मामें विलीन हो गई है. हमने तो मायाको ग्रहण किया (पकड़ा) फिर भी सद्‌गुरु धनी हमसे एक क्षणके लिए भी अलग नहीं हुए. प्रियतम धनी-सद्‌गुरुको मेरे अतिरिक्त अन्य किसीने नहीं पहचाना. मेरे धनीजी मुझे मिल गए (मैं उनके स्वरूपमें समा गई). हे श्याम ! मैं आपको पिउ पिउ कहकर पुकार रही हूँ.

प्रकरण १० चौपाई २३०

श्री षटरुती (बारमासी सहित) सम्पूर्ण

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर